जंगली घोड़ा

सिड, हिंदी : विदूषक

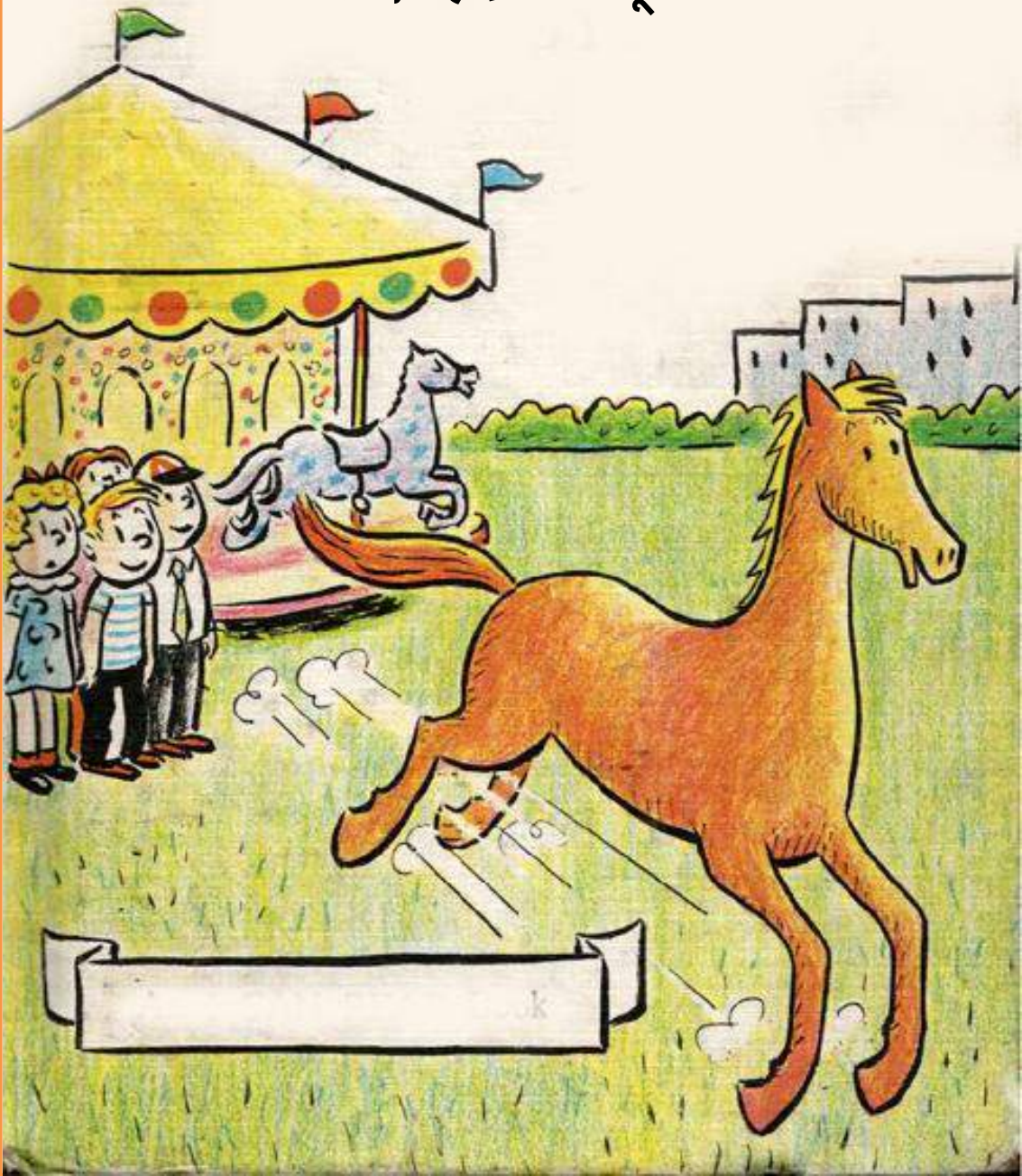

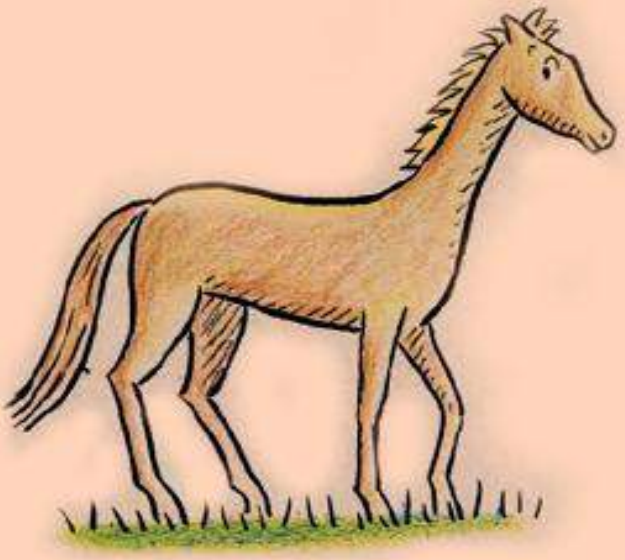

जंगली घोड़ा

सिड, हिंदी : विदूषक

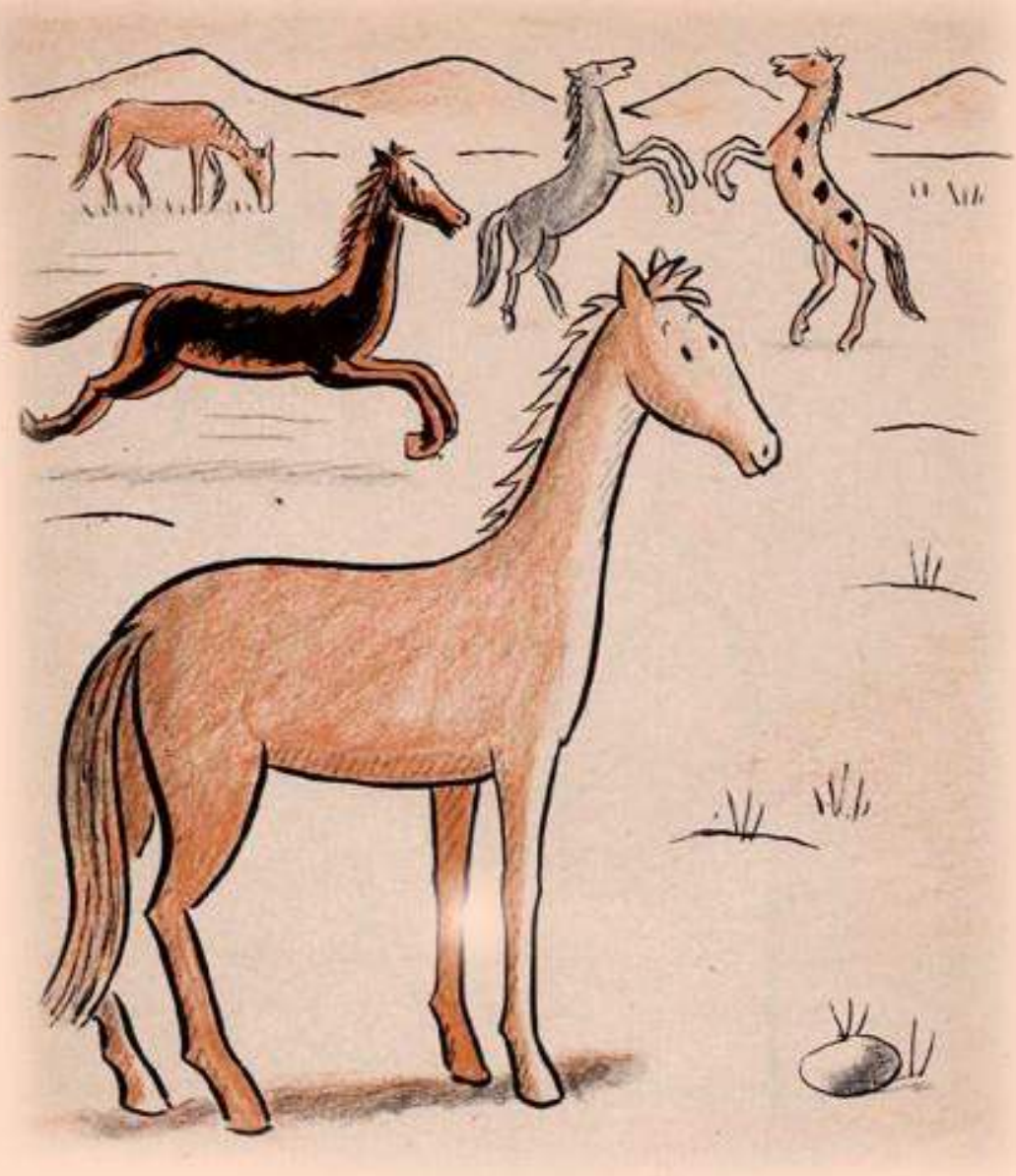

दबंग एक जंगली घोड़ा था.
वो पश्चिम अमरीका में अन्य
जंगली घोड़ों के साथ रहता था.

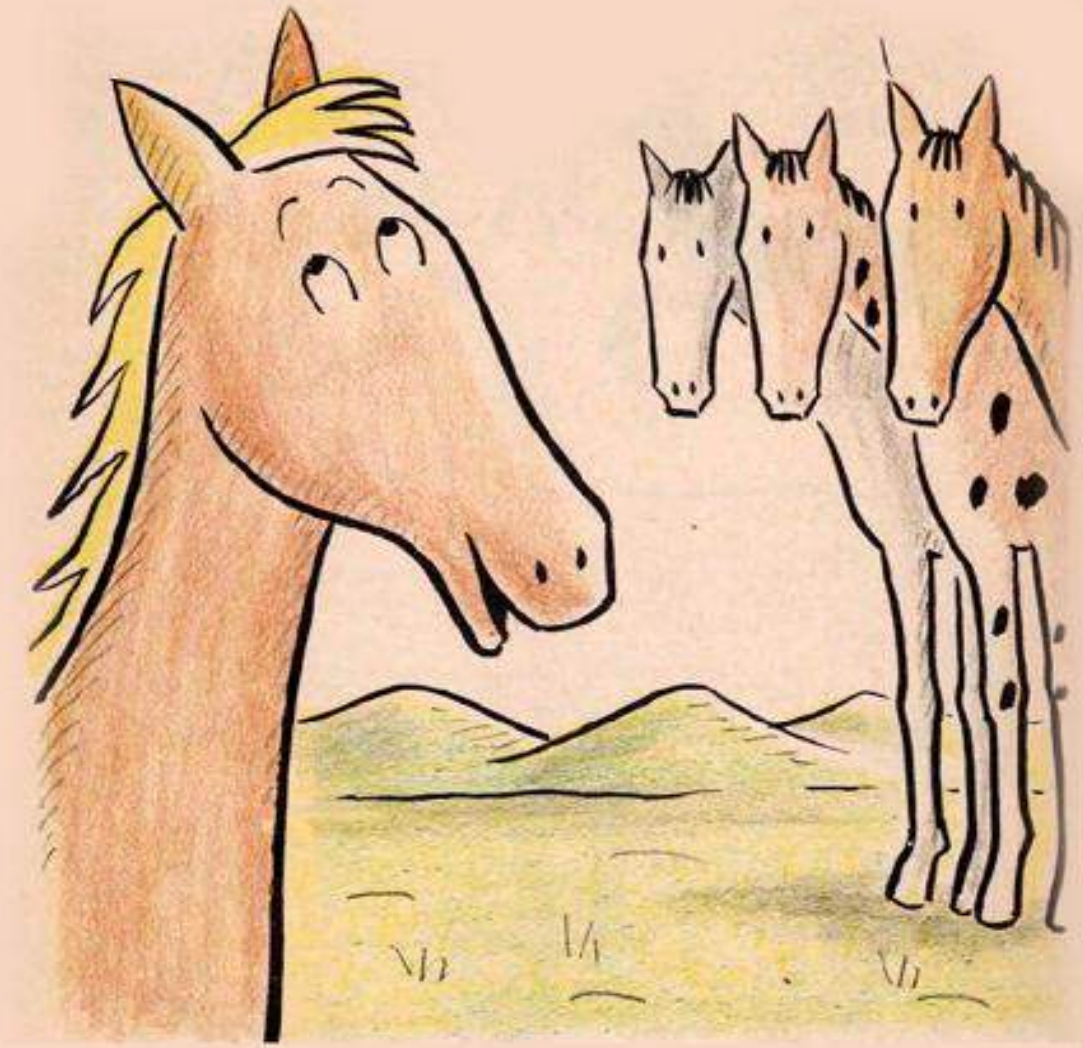

“काश, कोई मुझे प्यार करता,”
दबंग ने एक दिन कहा.
“काश, कोई मेरी देखभाल करता.”

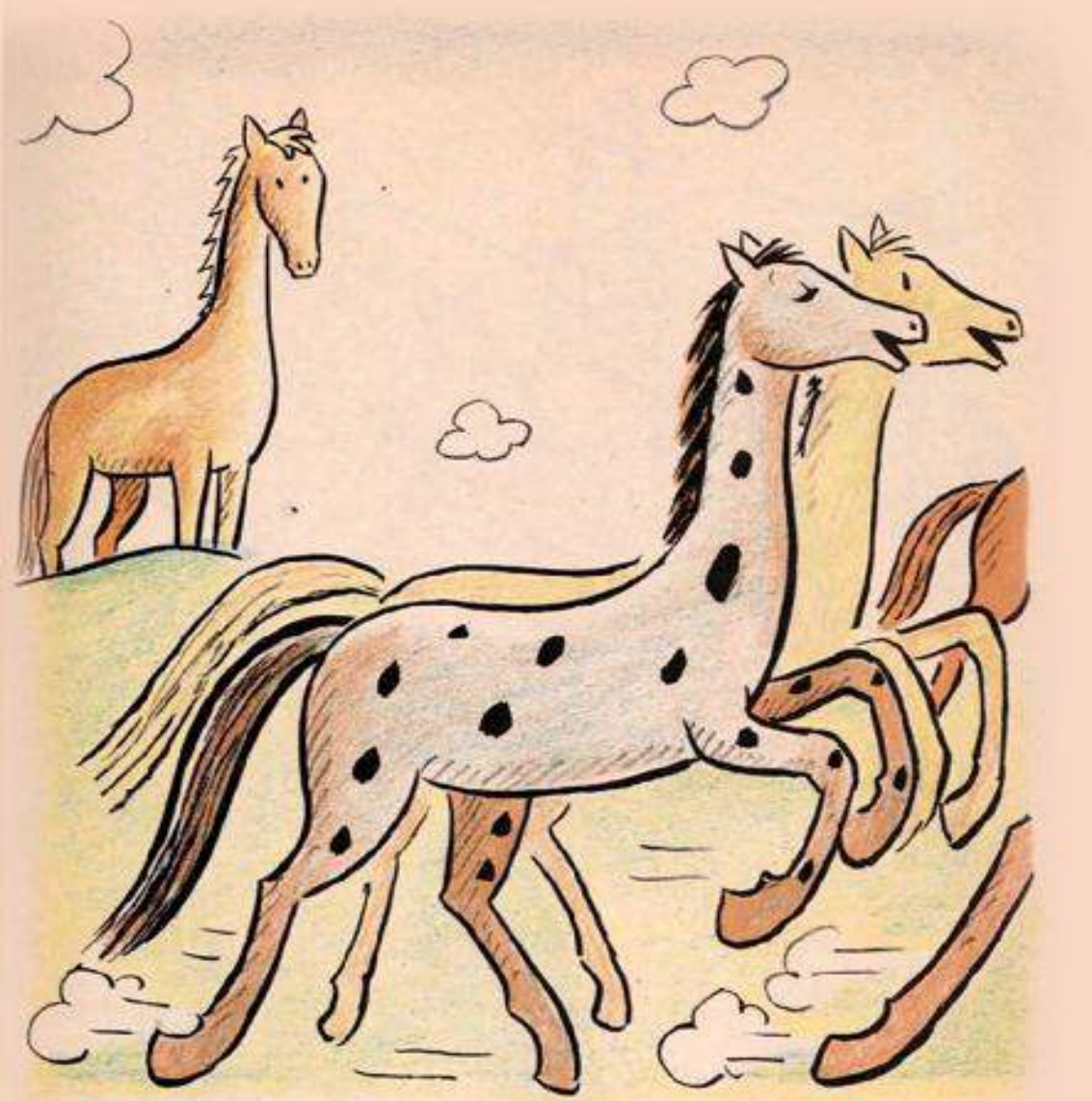

“तुम बेकार की बकवास कर रहे हो,”
बाकी घोड़ों ने उससे कहा.
“जंगली होने में बड़ा मज़ा है.”

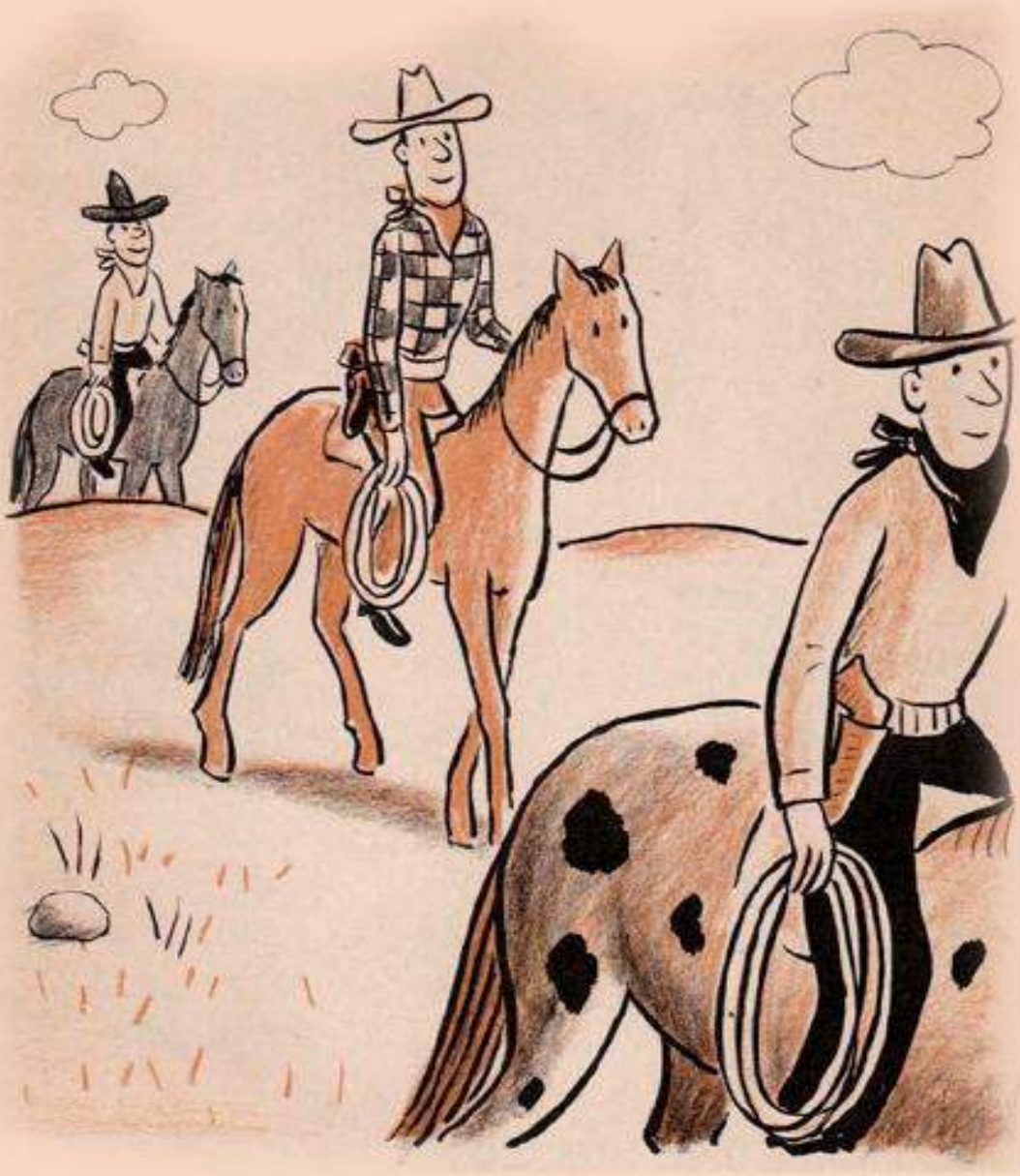

फिर एक दिन कुछ लोग रस्सियाँ
लेकर आए.
वे जंगली घोड़ों की तलाश में थे.

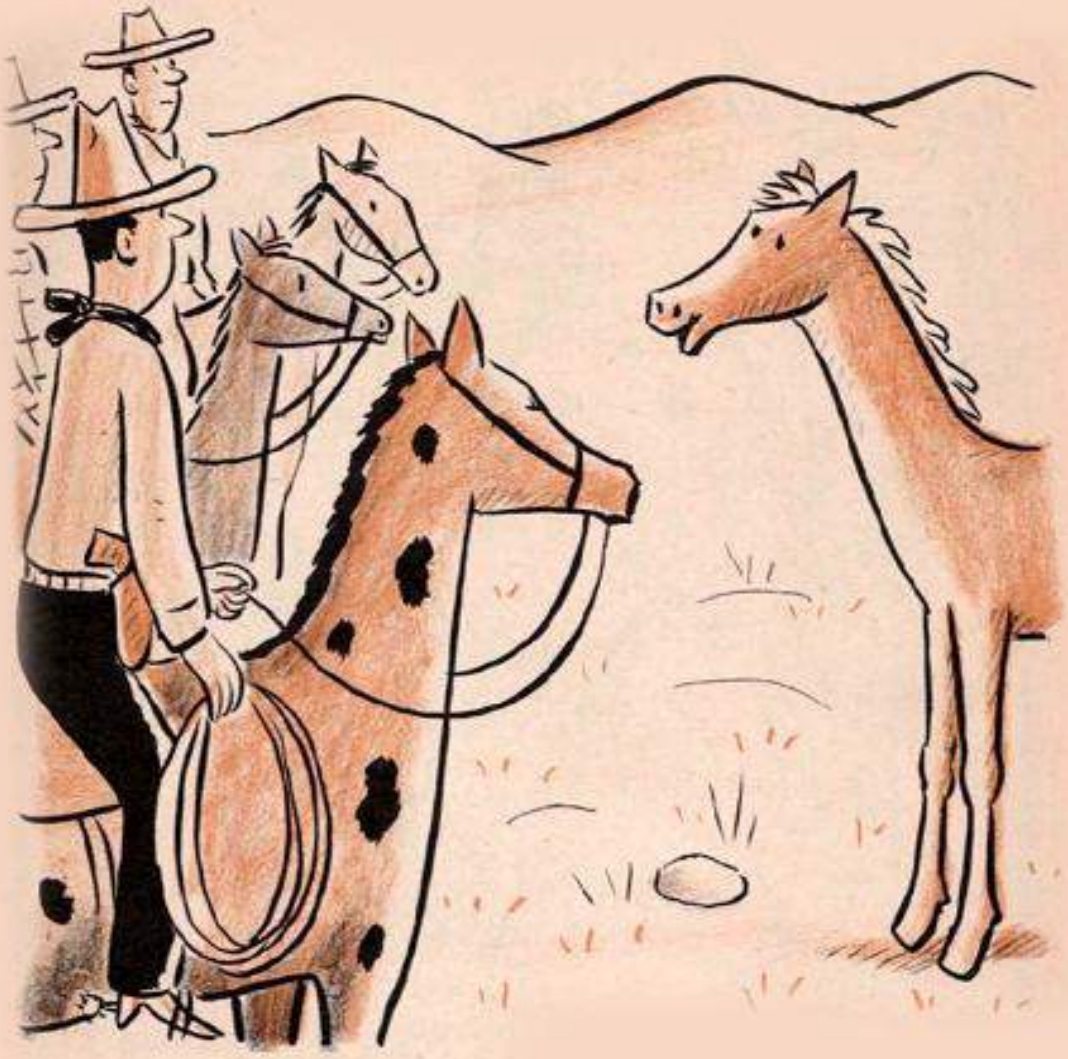

“मुझे आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई,”
दबंग ने कहा.
“कृपा मेरे गले में रस्सी डालें.”

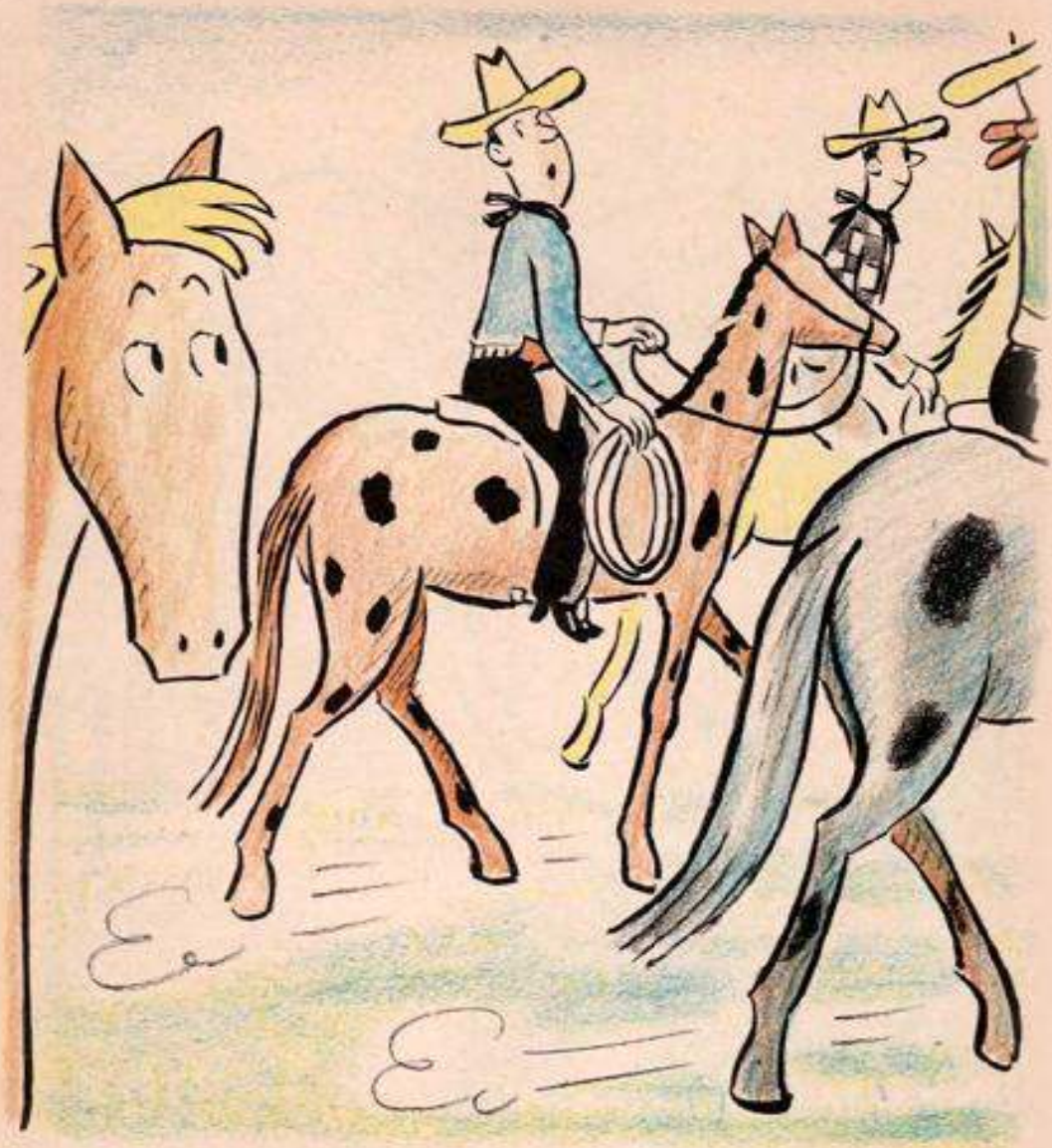

“वो घोड़ा तो अच्छी तरह से
दौड़ भी नहीं सकता है,”
उन आदमियों ने कहा.
“हमें ऐसे घोड़े की ज़रुरत नहीं है.”

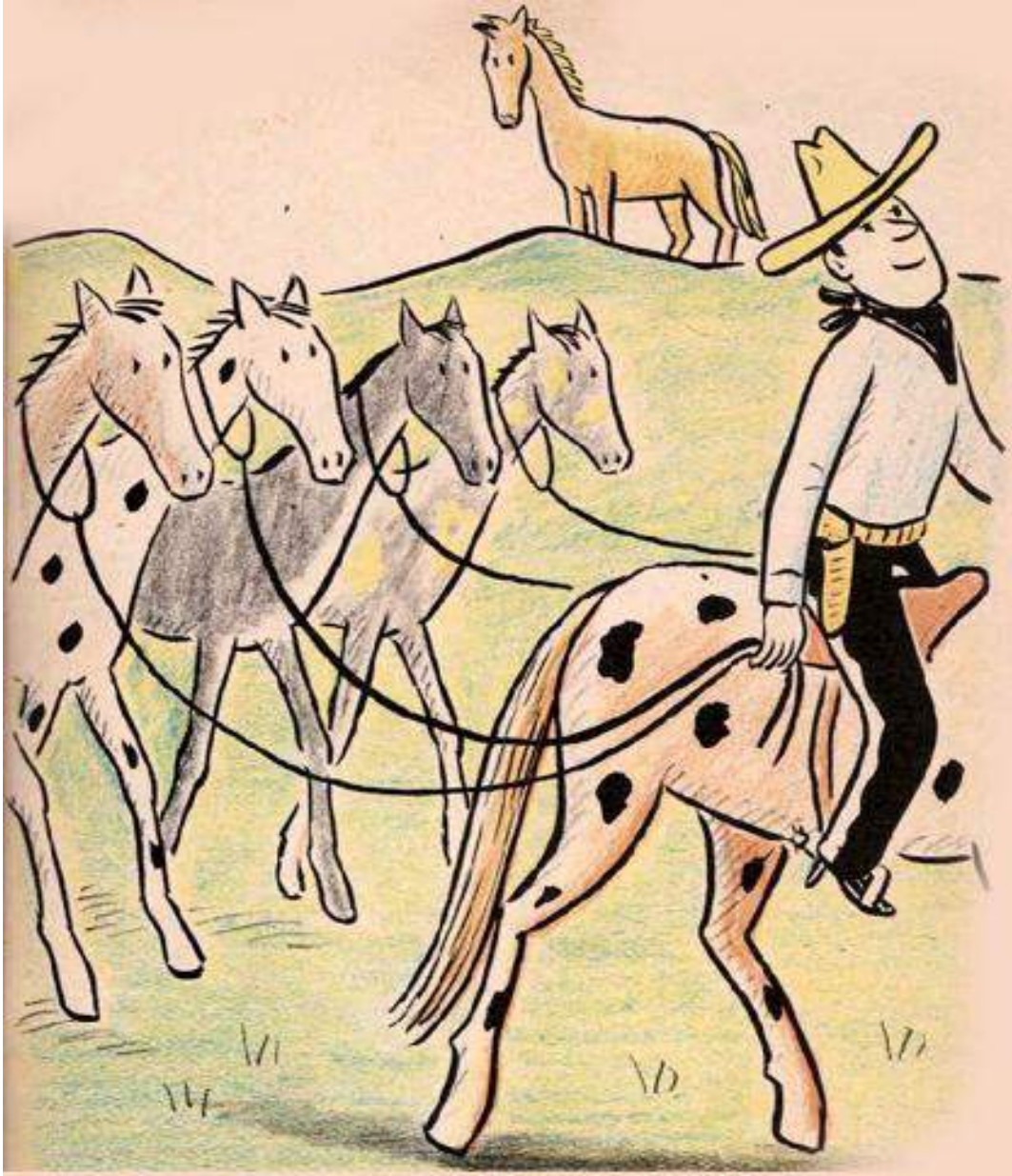

वे लोग बाकी सभी घोड़े अपने साथ ले गए.
वे सिर्फ दबंग को ही जंगल में छोड़ गए.

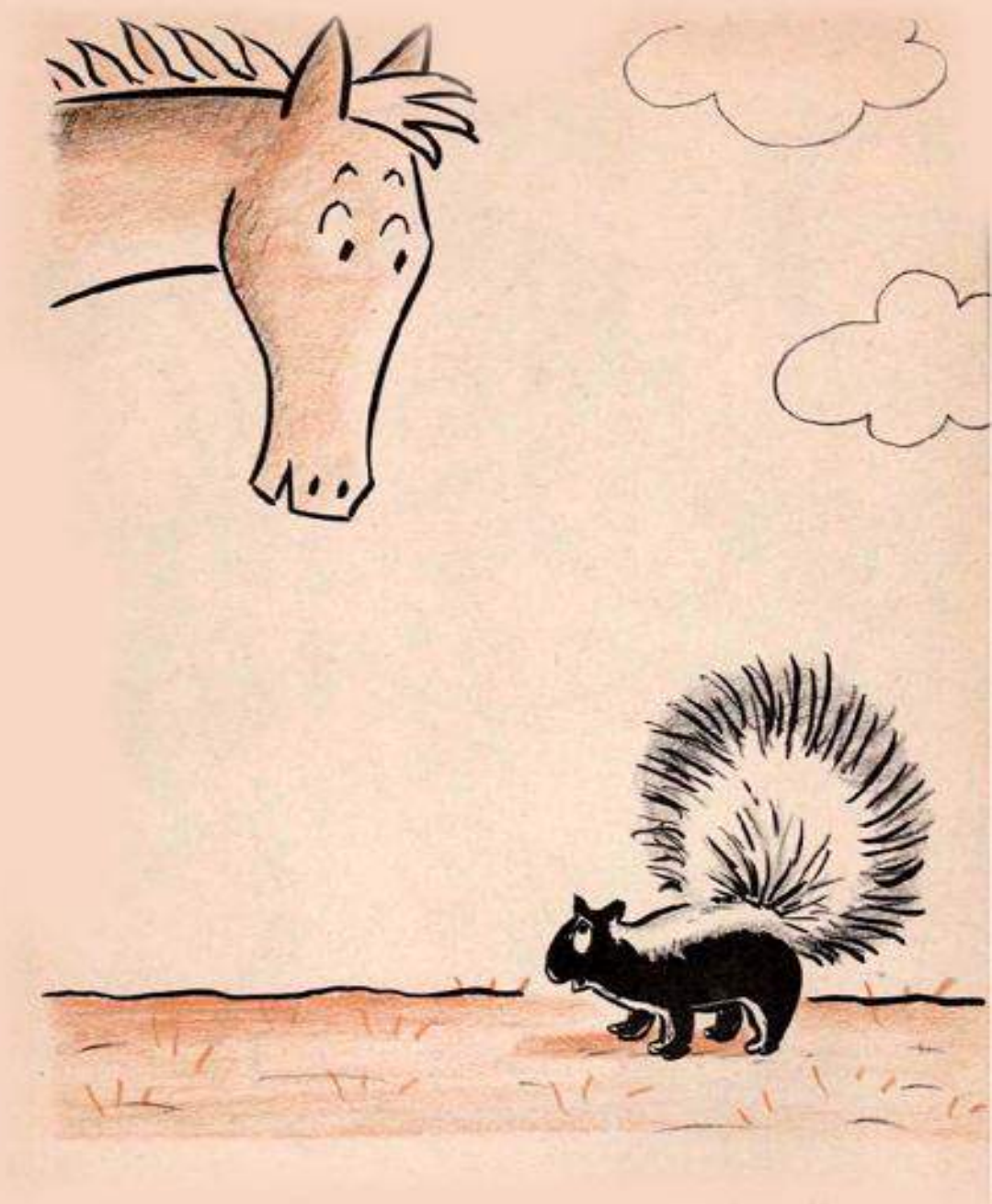

“मुझे भी कोई नहीं चाहता है,”
जंगली बिल्ली ने कहा.

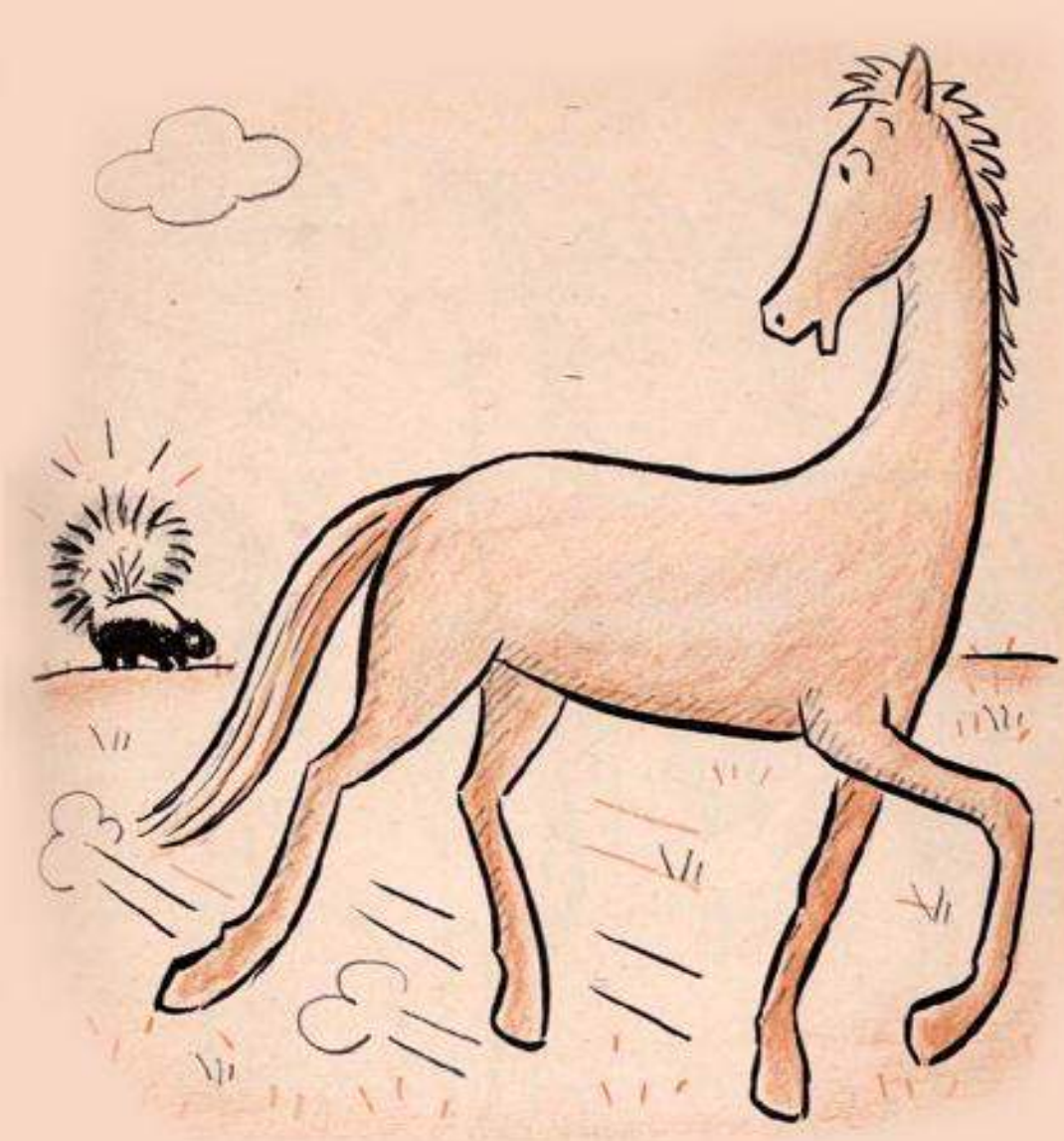

“लगता है मुझे इसका कारण पता है,”
दबंग ने कहा.
फिर वो वहां से तेज़ी से आगे बढ़ा.

दौड़ते-दौड़ते वो एक फार्म पर पहुंचा.
“शायद यहाँ किसी को मेरी ज़रुरत हो,”
उसने सोचा.

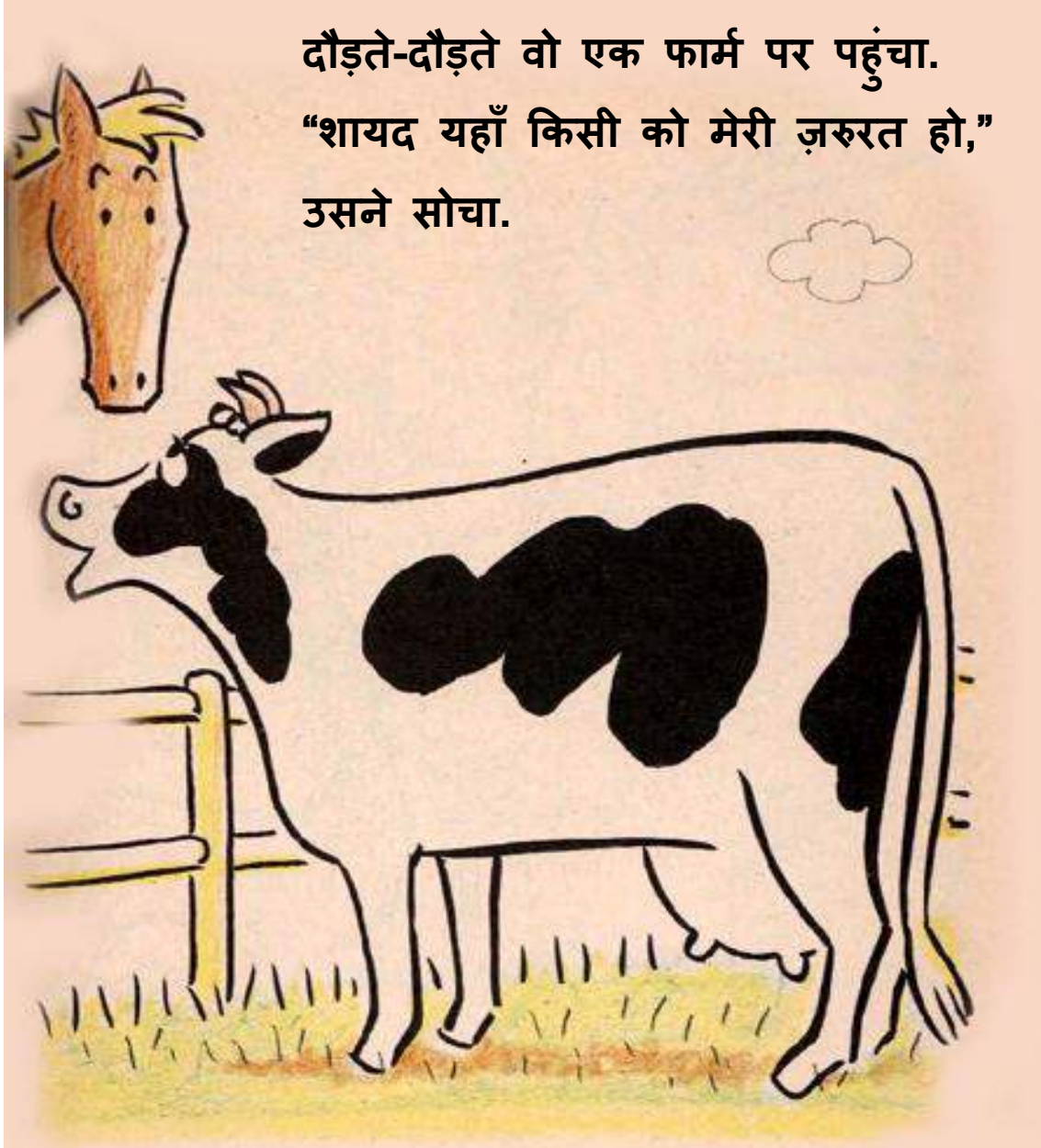

“तुम दूध नहीं दे सकते हो,”
गाय ने कहा.

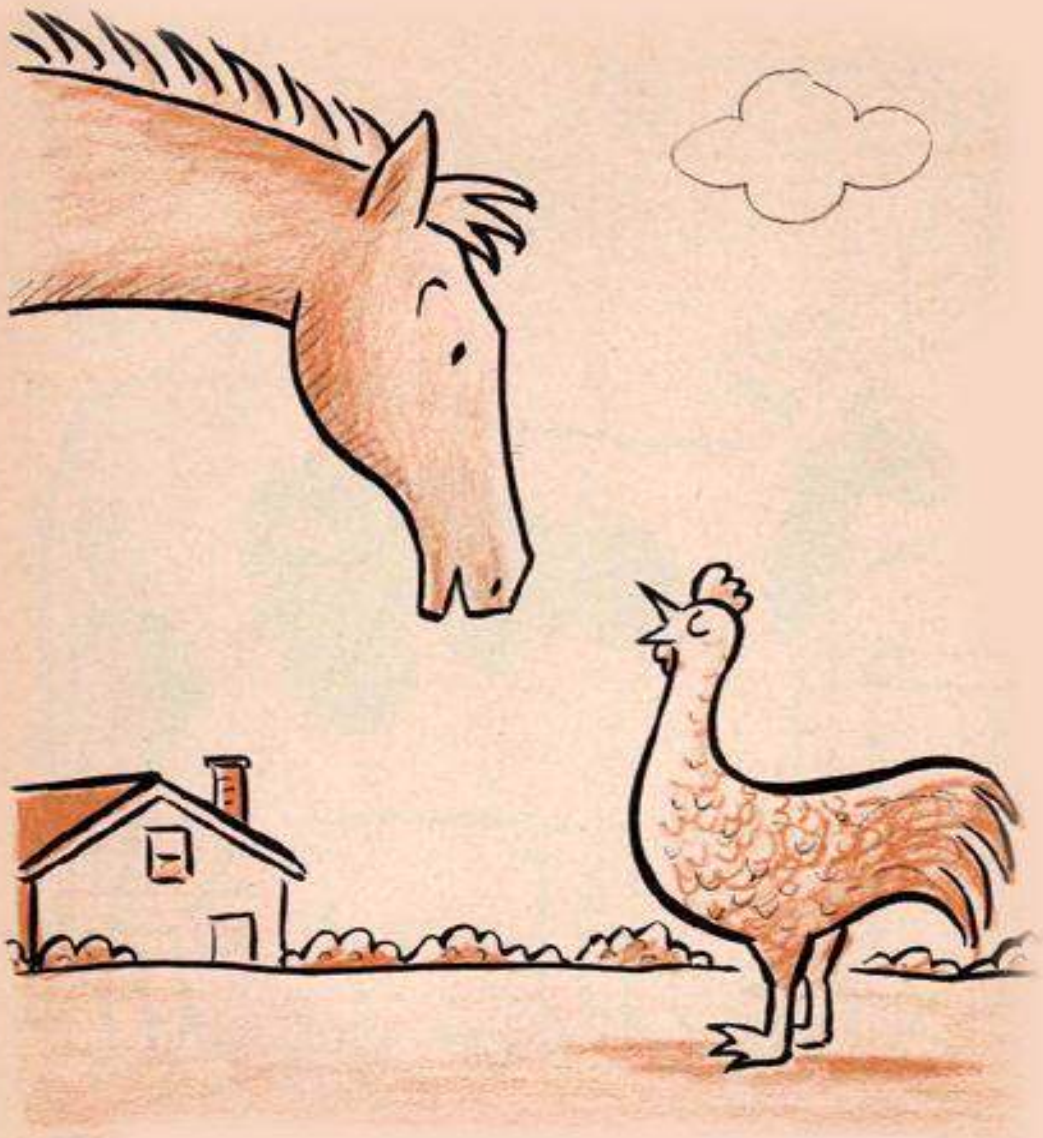

“तुम अंडे नहीं से सकते,”
मुर्गी ने कहा.

“मैं किसान की गाड़ी खींचता हूँ,”
सफ़ेद घोड़े के कहा.

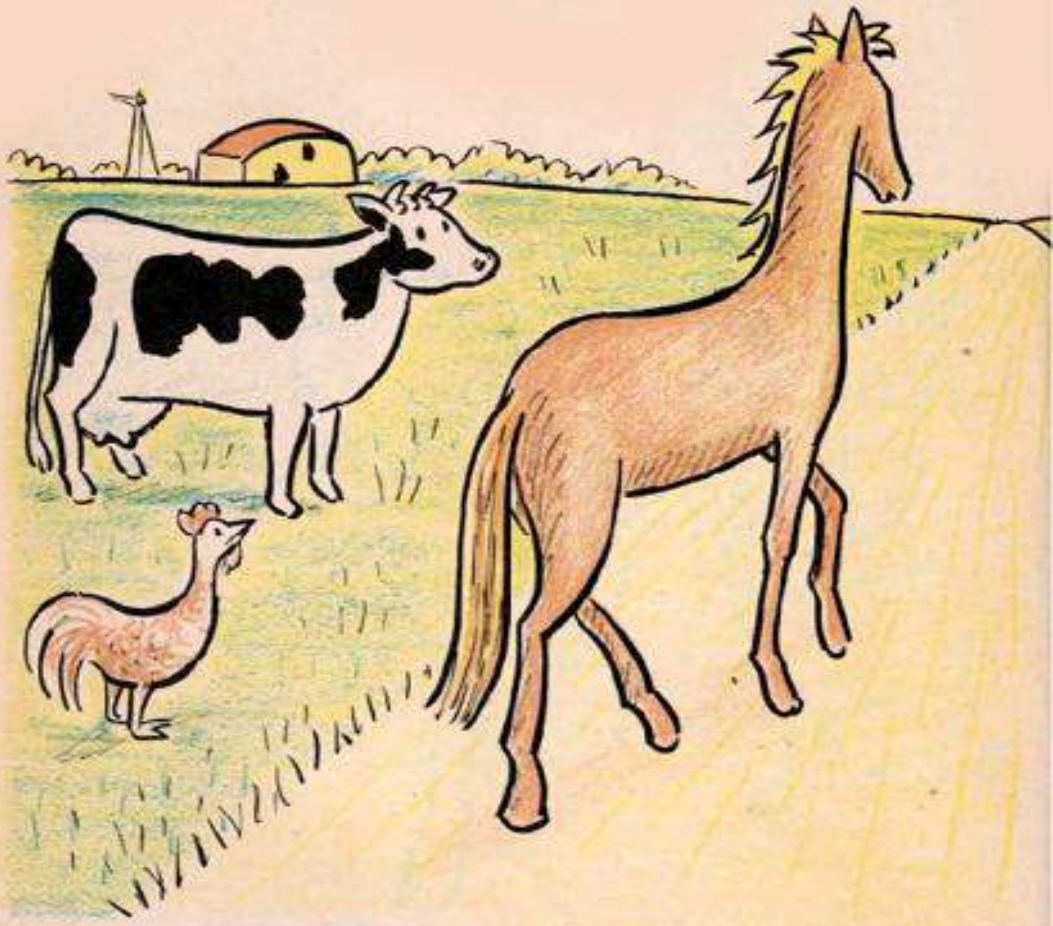

“अलविदा,” दबंग ने कहा.

फिर दबंग दुबारा से सड़क पर आगे बढ़ा.

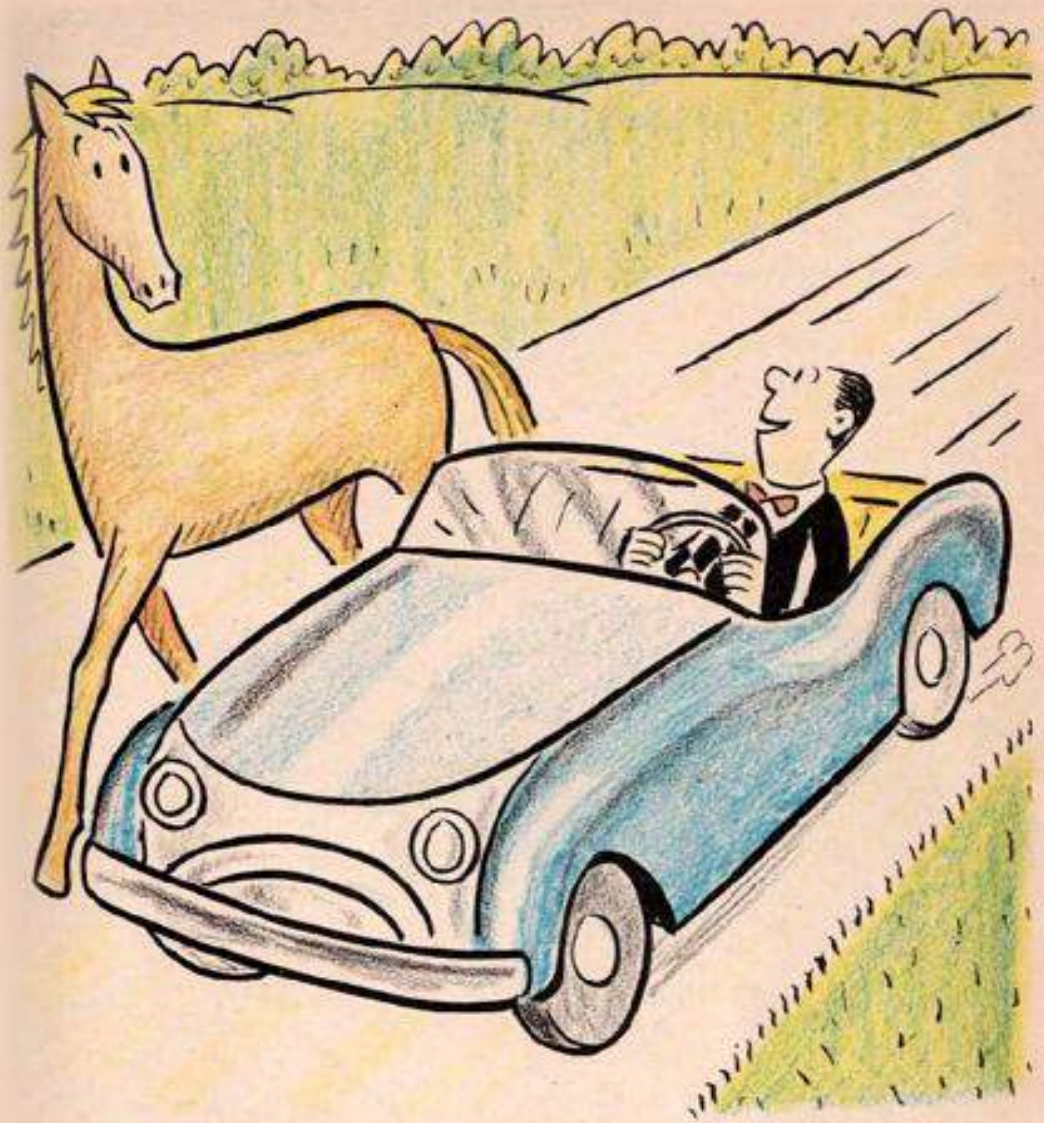

दबंग के सामने से एक कार गुजरी.
“इसमें 250-हॉर्सपावर का इंजन लगा है,”
कार के ड्राईवर ने कहा.

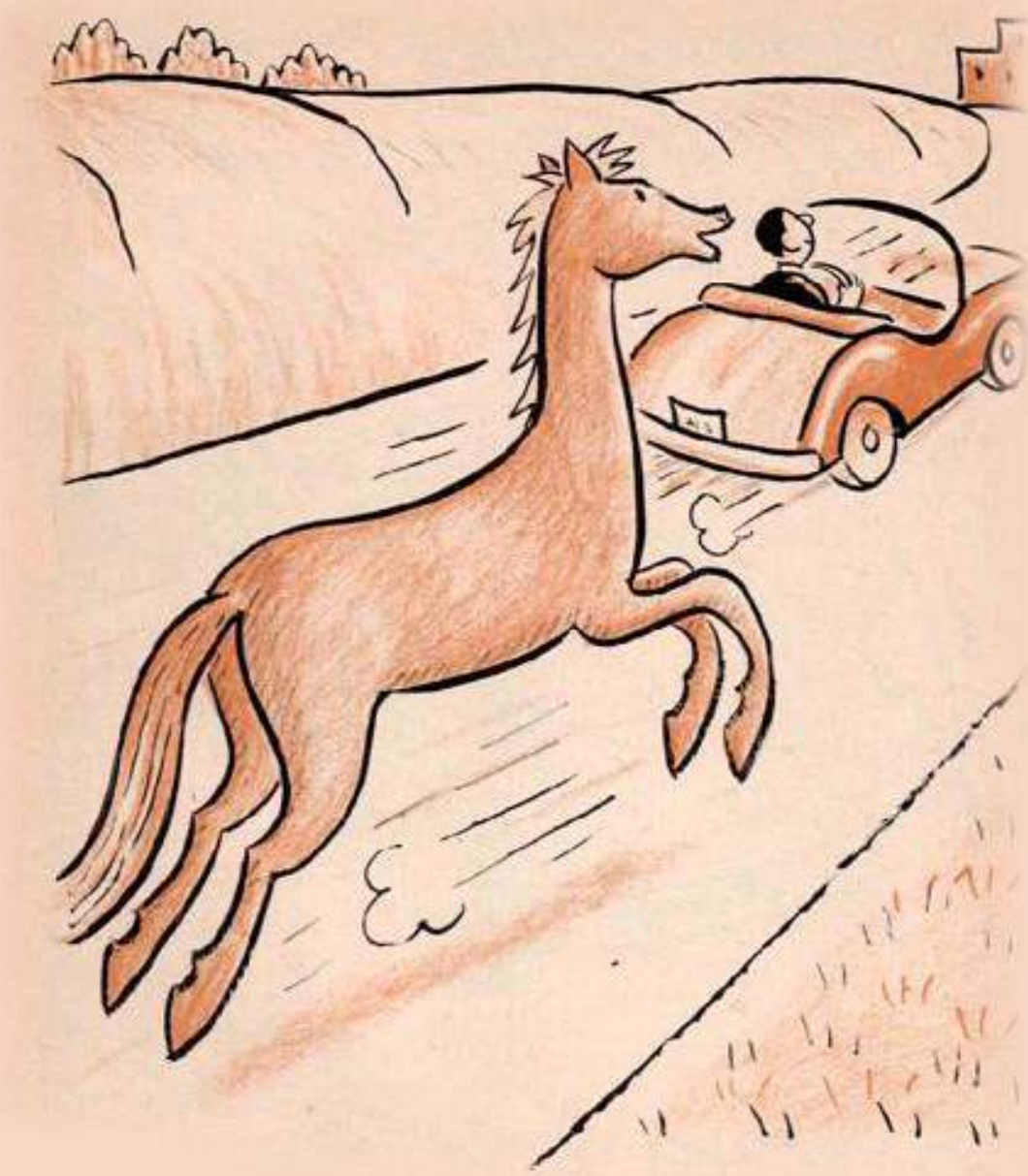

“मैं तो सिर्फ एक हॉर्सपावर का हूँ,”
दबंग ने कहा.

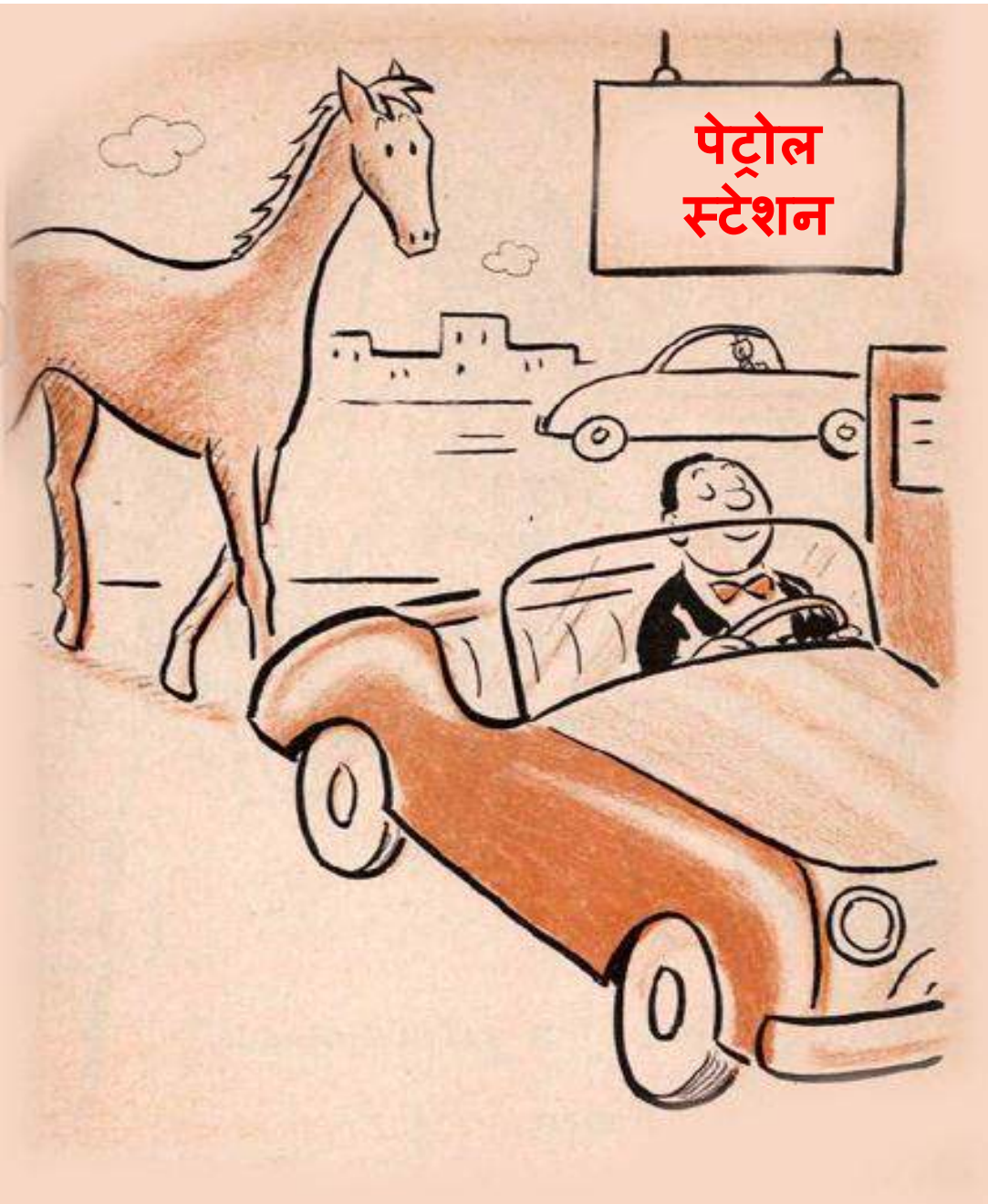

फिर कार एक पेट्रोल स्टेशन पर रुकी.
दबंग भी वहां पर रुका.

“मेरी गाड़ी में 10-गैलन पेट्रोल भरो,”
ड्राईवर ने कहा.
“मुझे 10-गैलन पानी चाहिए,”
दबंग ने कहा.

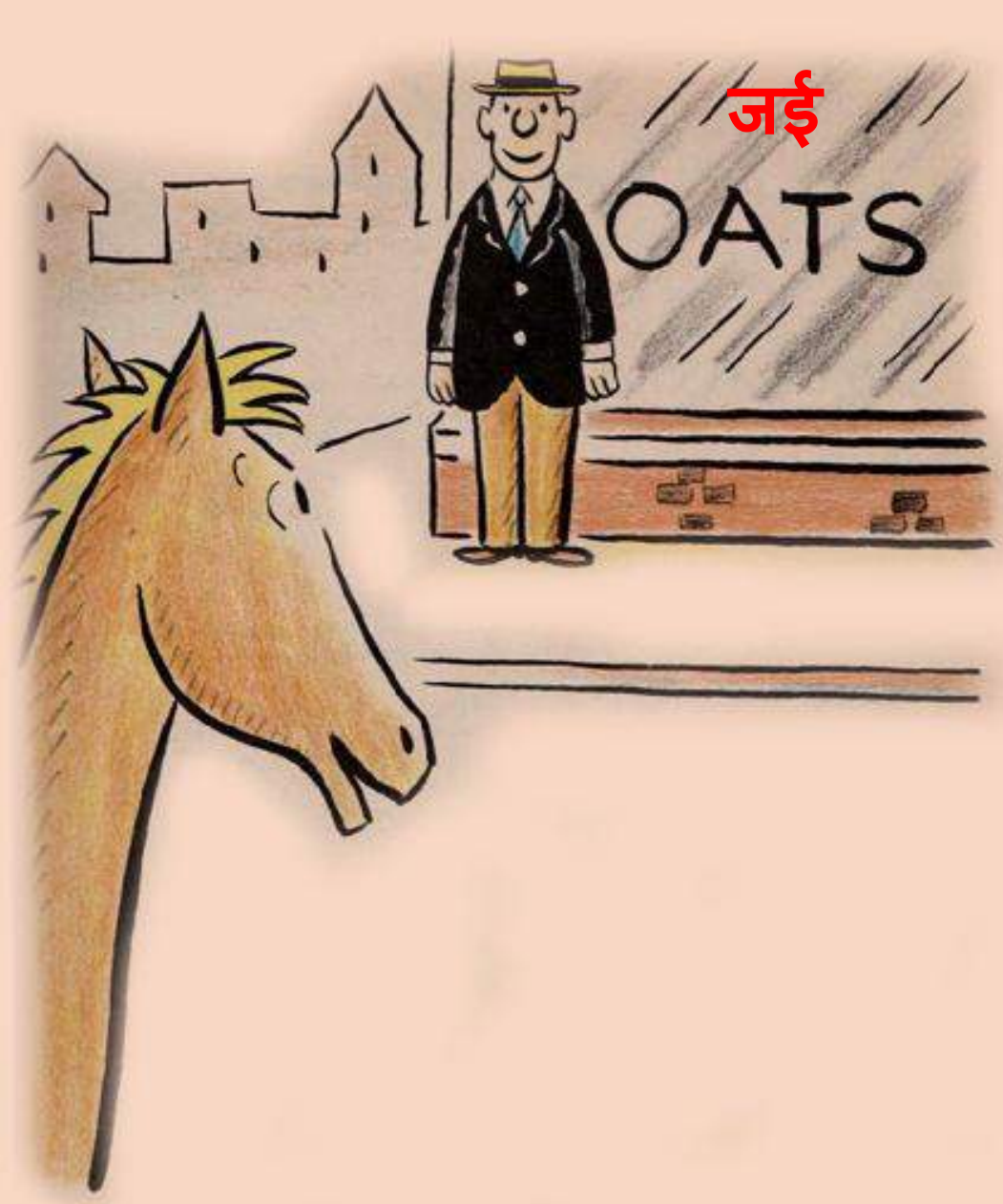

फिर दबंग को “जई” का बोर्ड दिखा.

“मुझे भूख लगी है,” उसने कहा.

पर वो बोर्ड जई का नहीं था.
वो बोर्ड, कपड़ों की दुकान का था.
“मैं कपड़े तो खा नहीं सकता,”
दबंग ने कहा.

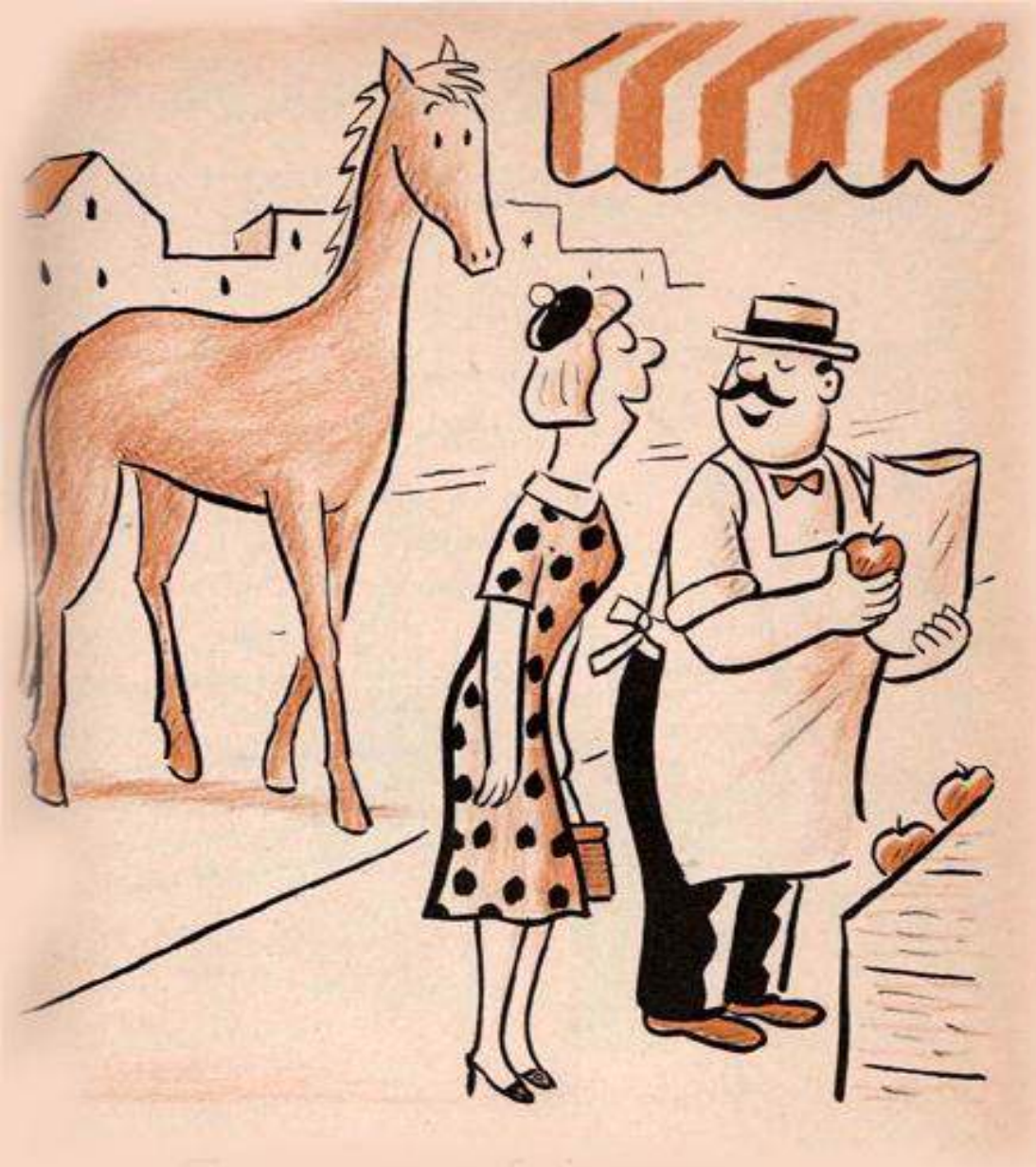

फिर दबंग को एक फलों की दुकान दिखी.
“मुझे एक किलो सेब चाहिए,”
एक महिला ने कहा.

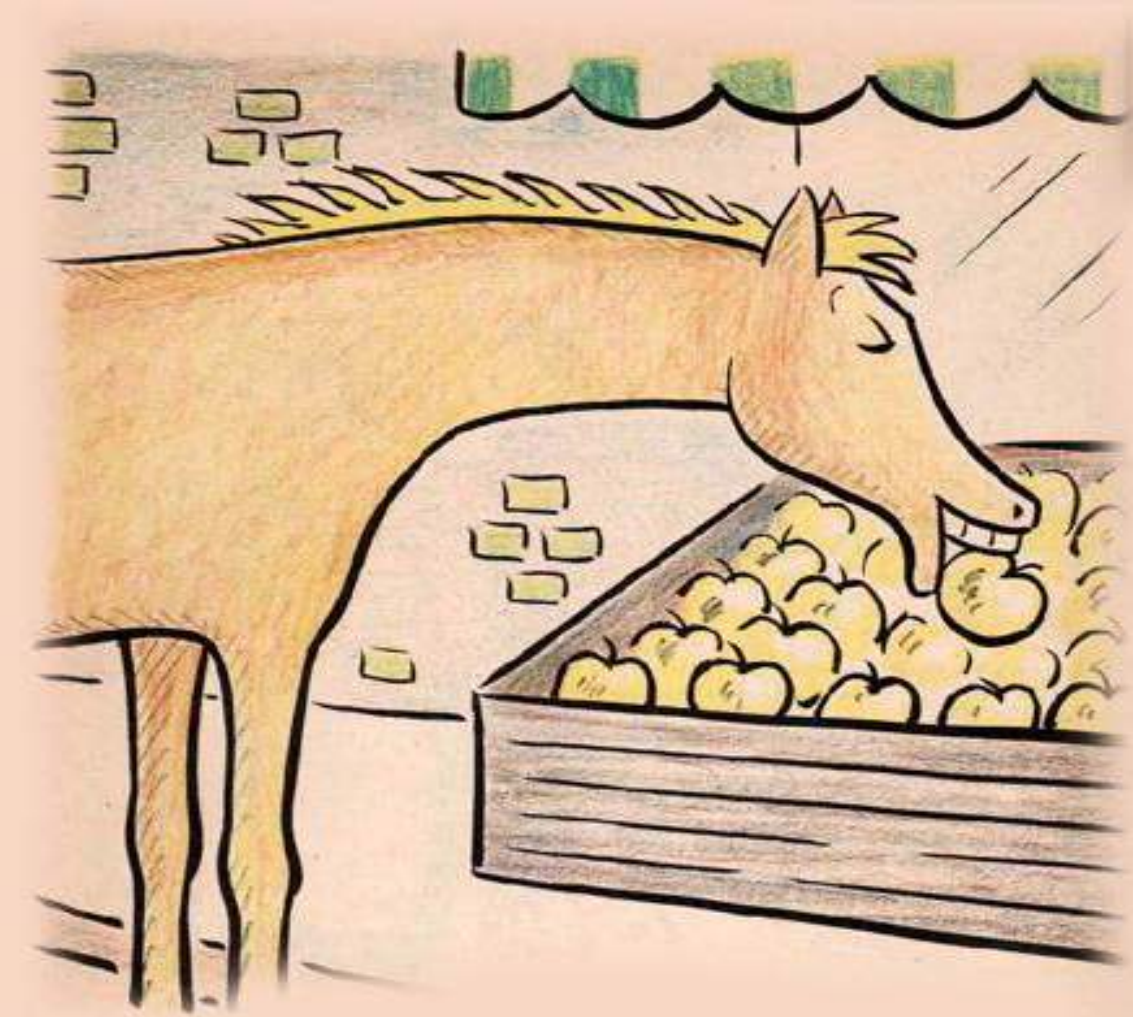

“मुझे भी एक किलो सेब चाहिए,”
दबंग ने कहा.
“क्या तुम्हारे पास पैसे हैं?”
दुकानदार ने पूछा.
“नहीं,” दबंग ने जवाब दिया.

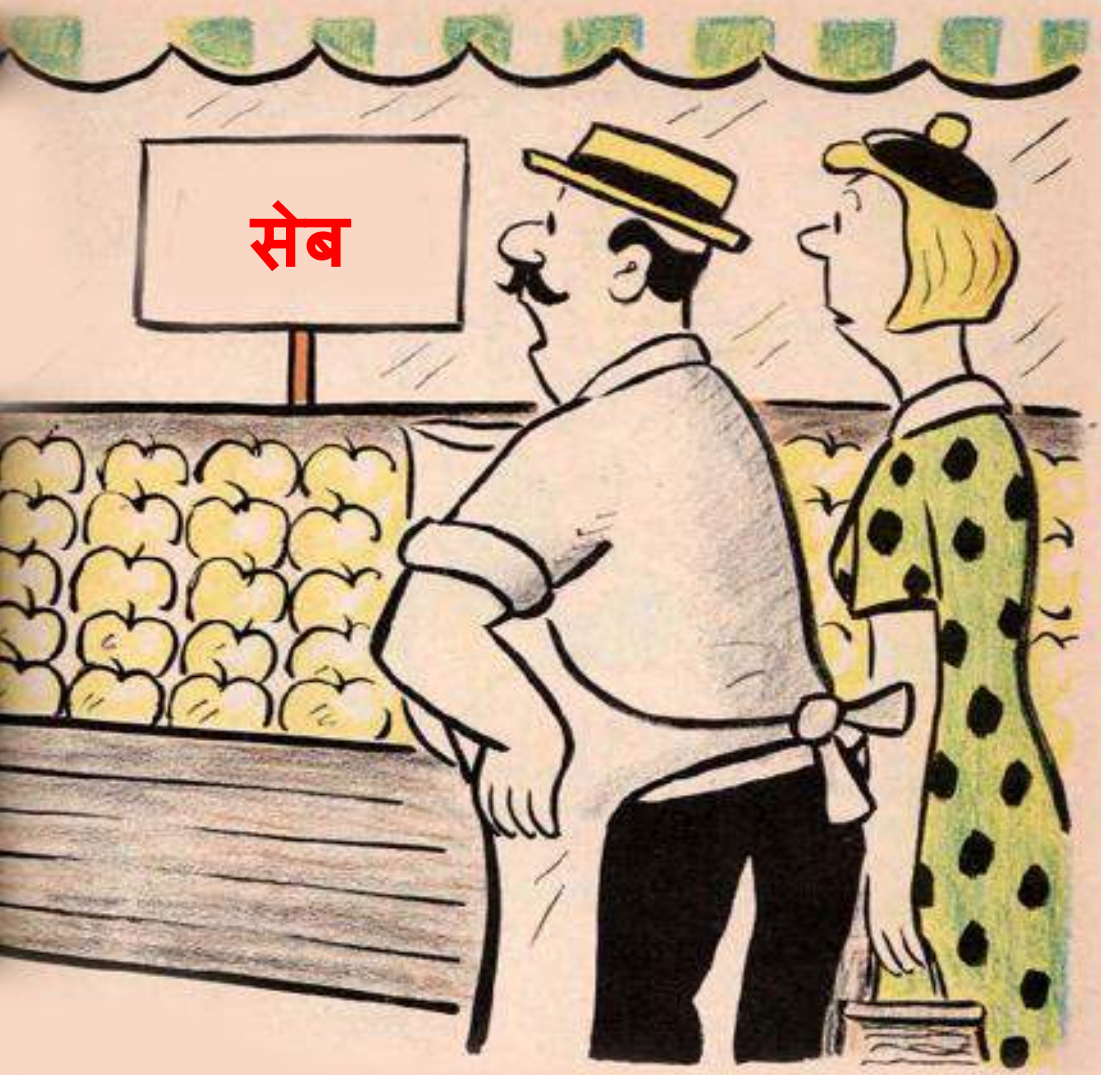

“कोई बात नहीं. वापसी में पैसे दे देना,”
दुकानदार ने कहा.
“ठीक है,” दबंग ने कहा.
“तुम्हारे सेब बहुत अच्छे हैं.”

दबंग ने एक घर में झाँक कर देखा.

वहां दो महिलायें चाय पी रही थीं.

“आपको कितनी चीनी चाहिए?”

एक महिला ने पूछा.

“मैं जितनी चाहूं उतनी चीनी खा सकता हूँ,” दबंग ने कहा.

खिलौने

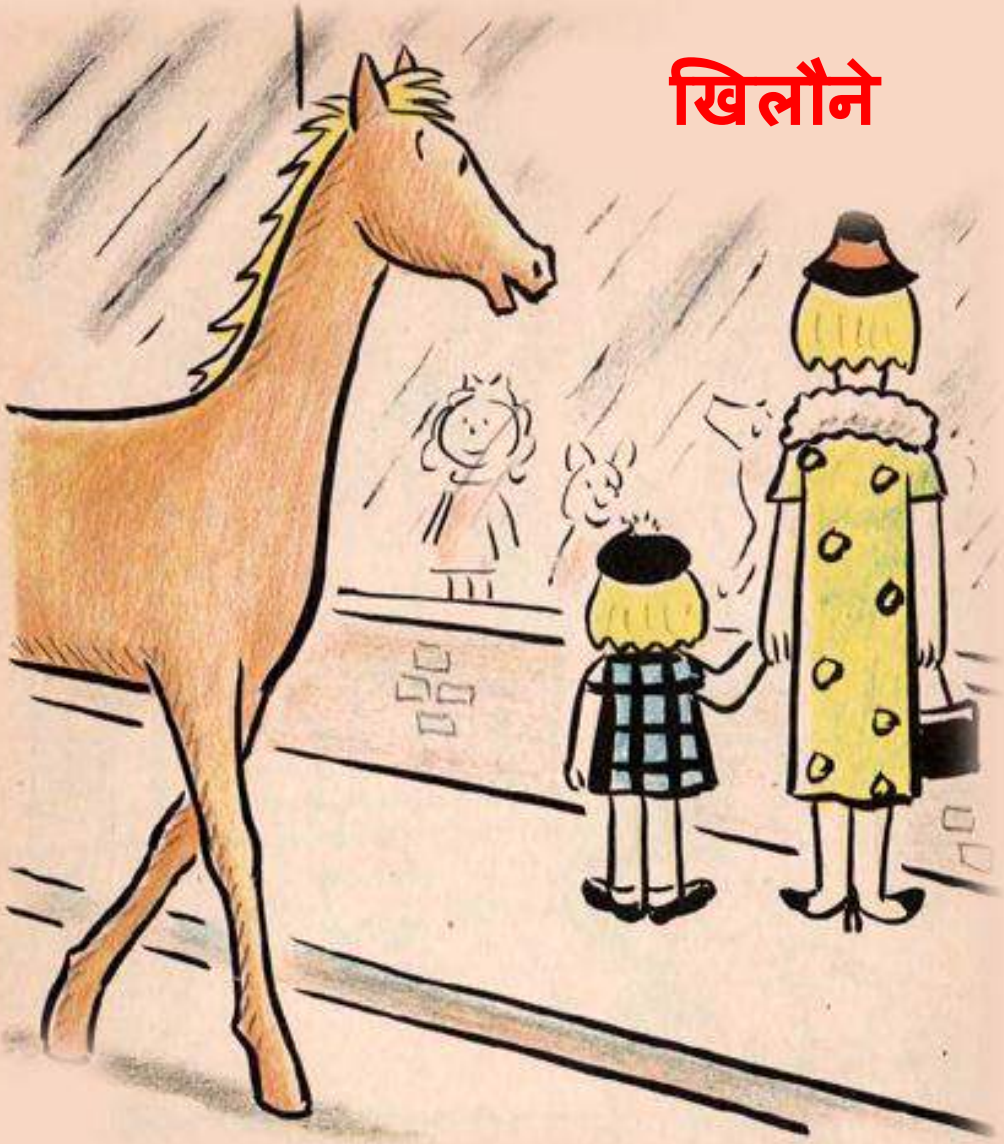

फिर दबंग एक खिलौनों की दुकान में गया.
“काश मेरे पास डोलने वाला एक लकड़ी का घोड़ा होता,”
एक छोटी लड़की ने कहा.

“मैं तुम्हारा डोलने वाला घोड़ा बन सकता हूँ,” दबंग ने कहा. “ज़रा देखो!”

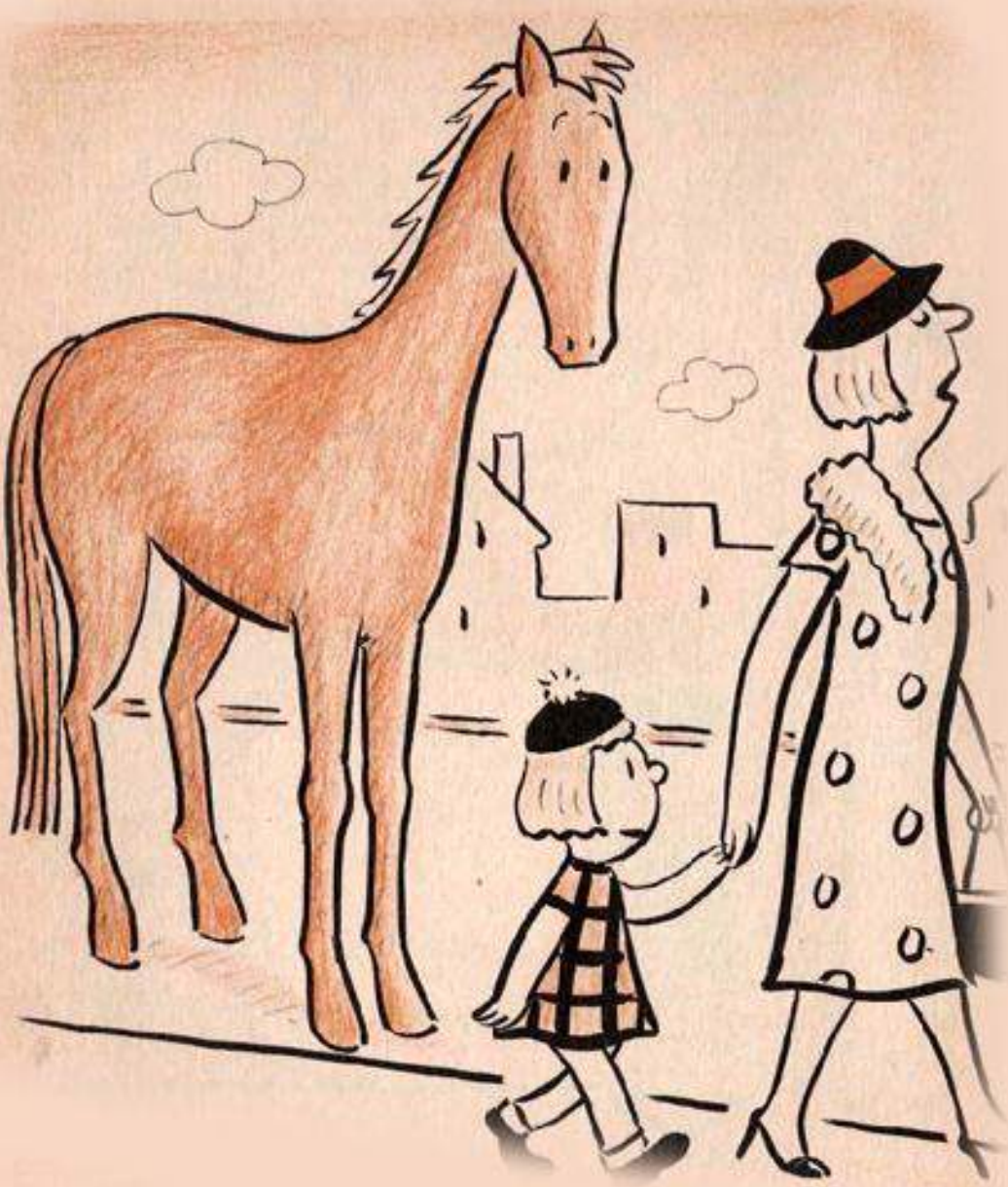

“तुम हमारे घर के लिए बहुत बड़े हो,”
लड़की की माँ ने कहा.

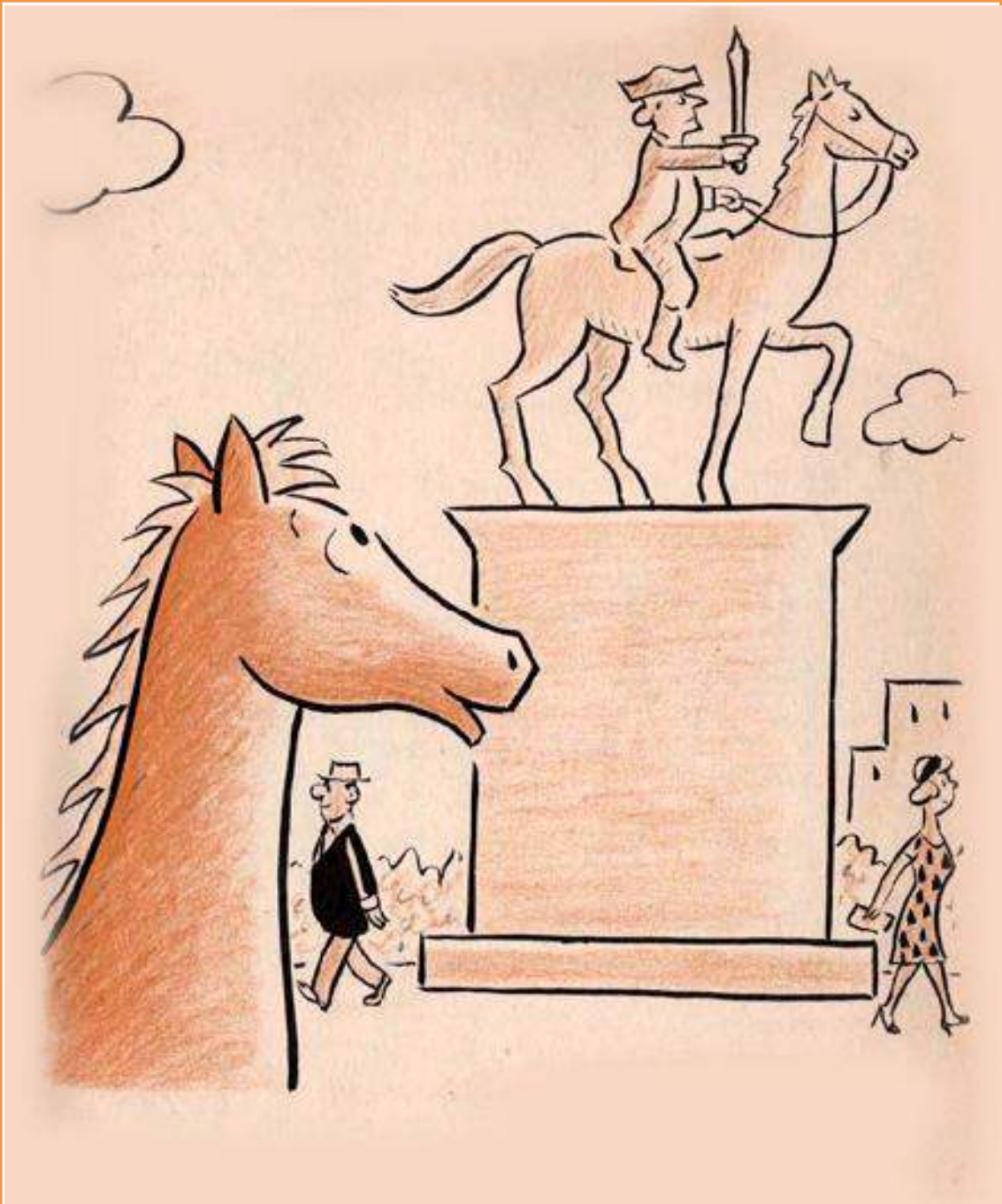

फिर दबंग को घोड़े की स्मारक की एक मूर्ती दिखी. “शायद मैं एक मूर्ती बन सकता हूँ” उसने कहा.

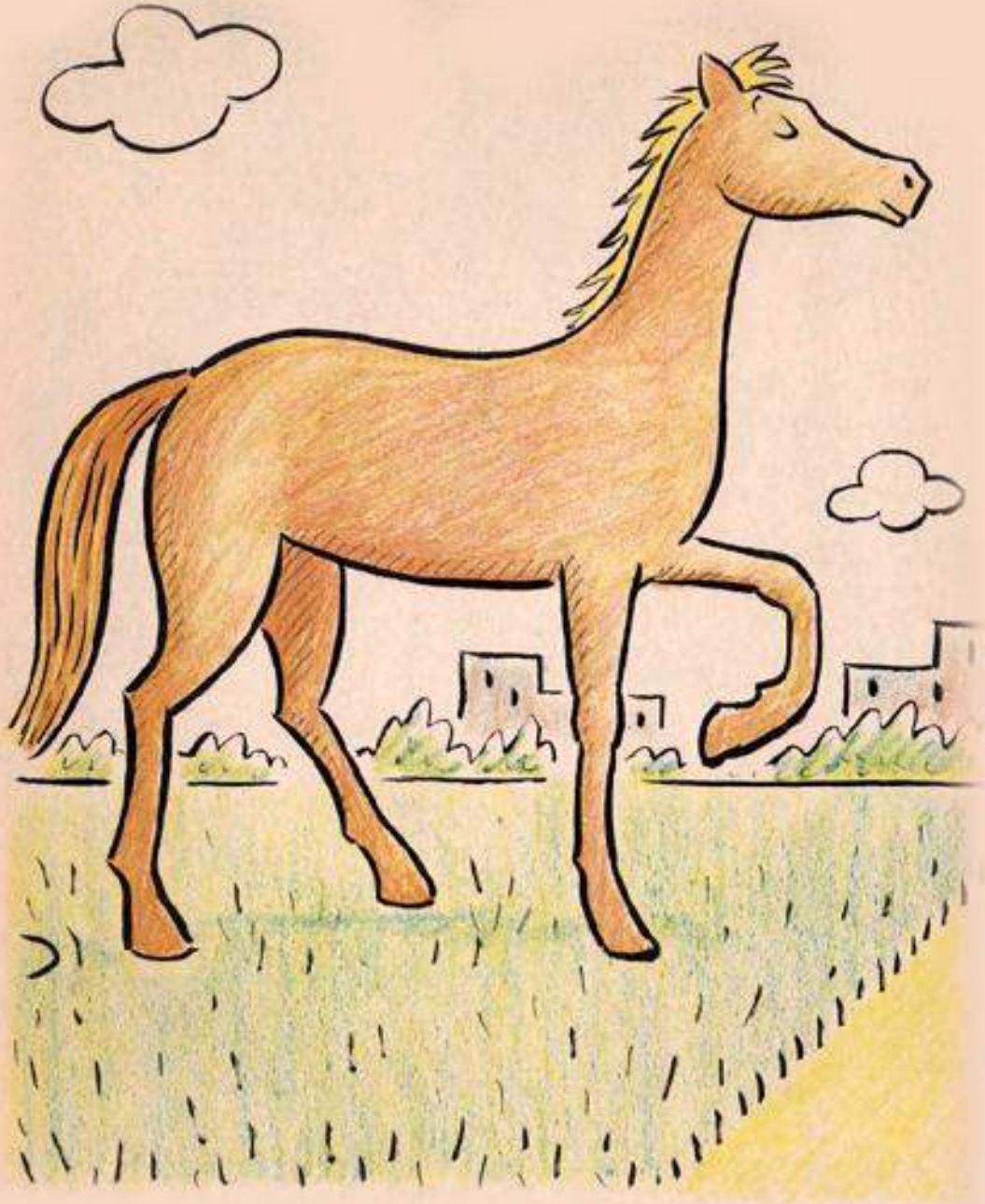

दबंग बिना हिले-डुले,

मूर्ती जैसे कुछ देर खड़ा रहा.

बहुत से लोगों ने उसे एक स्मारक समझा.

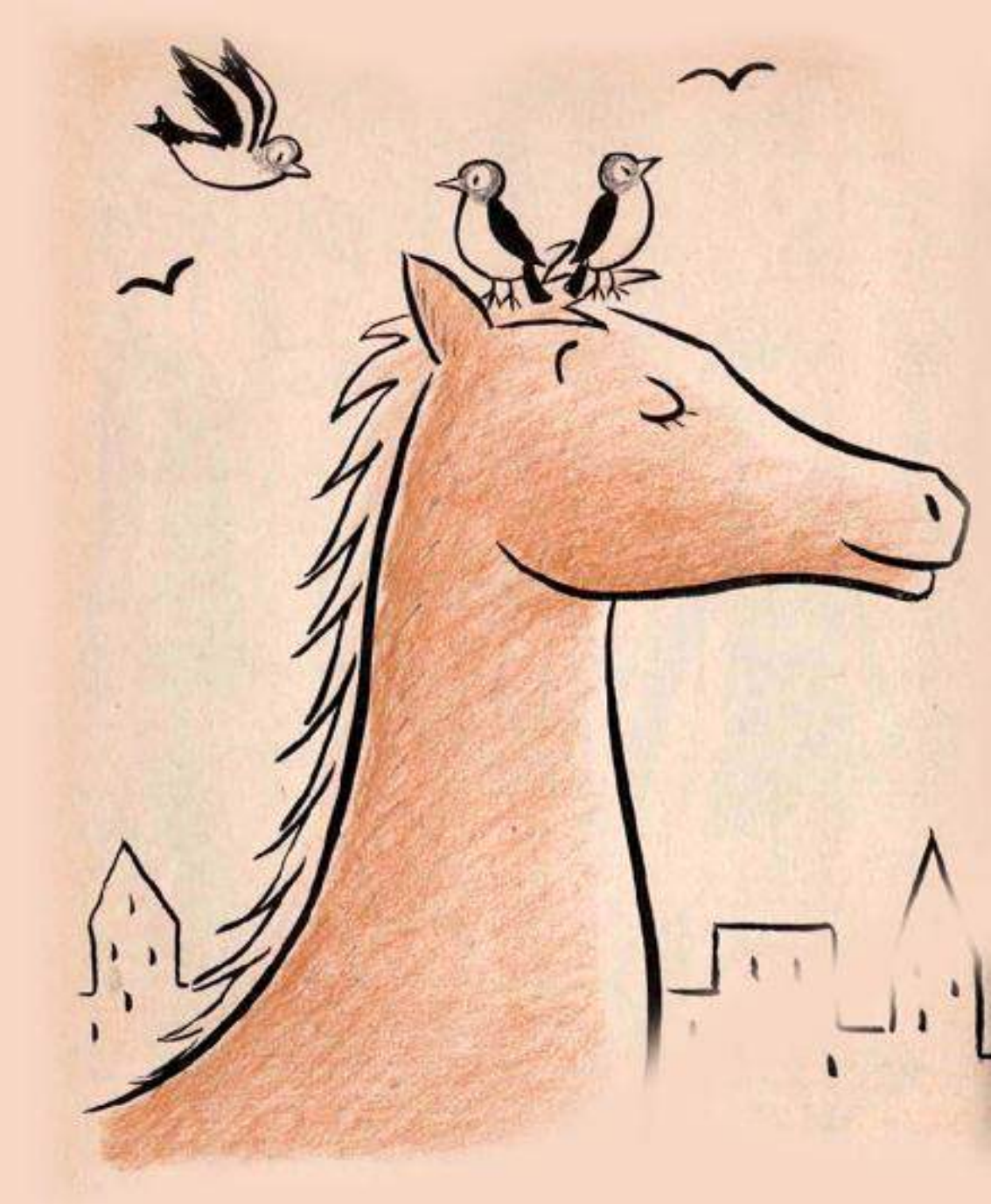

चिड़ियों ने भी उसे एक मूर्ती समझा.

फिर दबंग को एक महिला दिखी
जिनकी हैट में एक पंख लगा था.

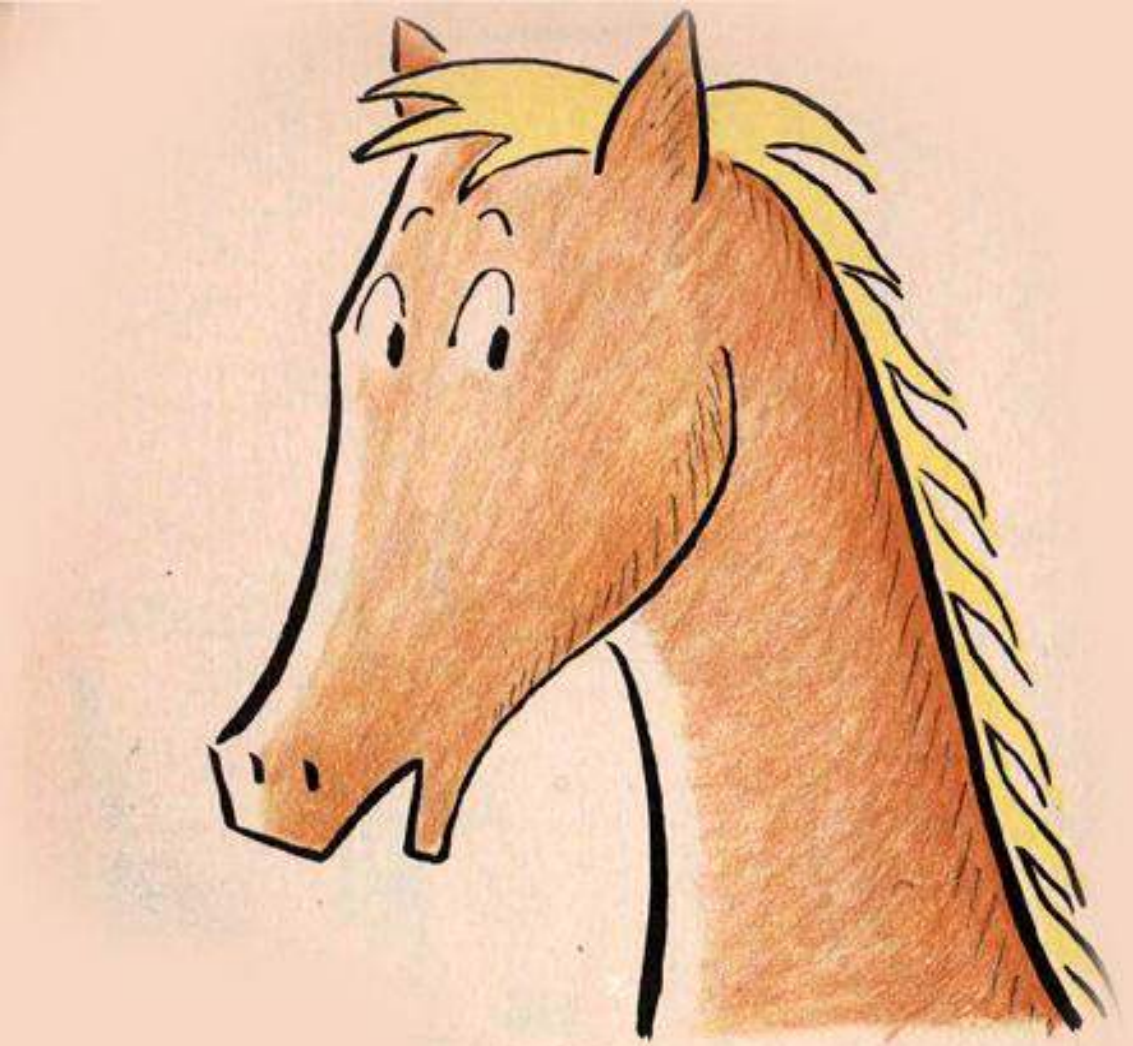

“अगर वो पंख मेरी नाक से छुआ
तो मुझे छींक आ जाएगी,”
दबंग ने कहा.

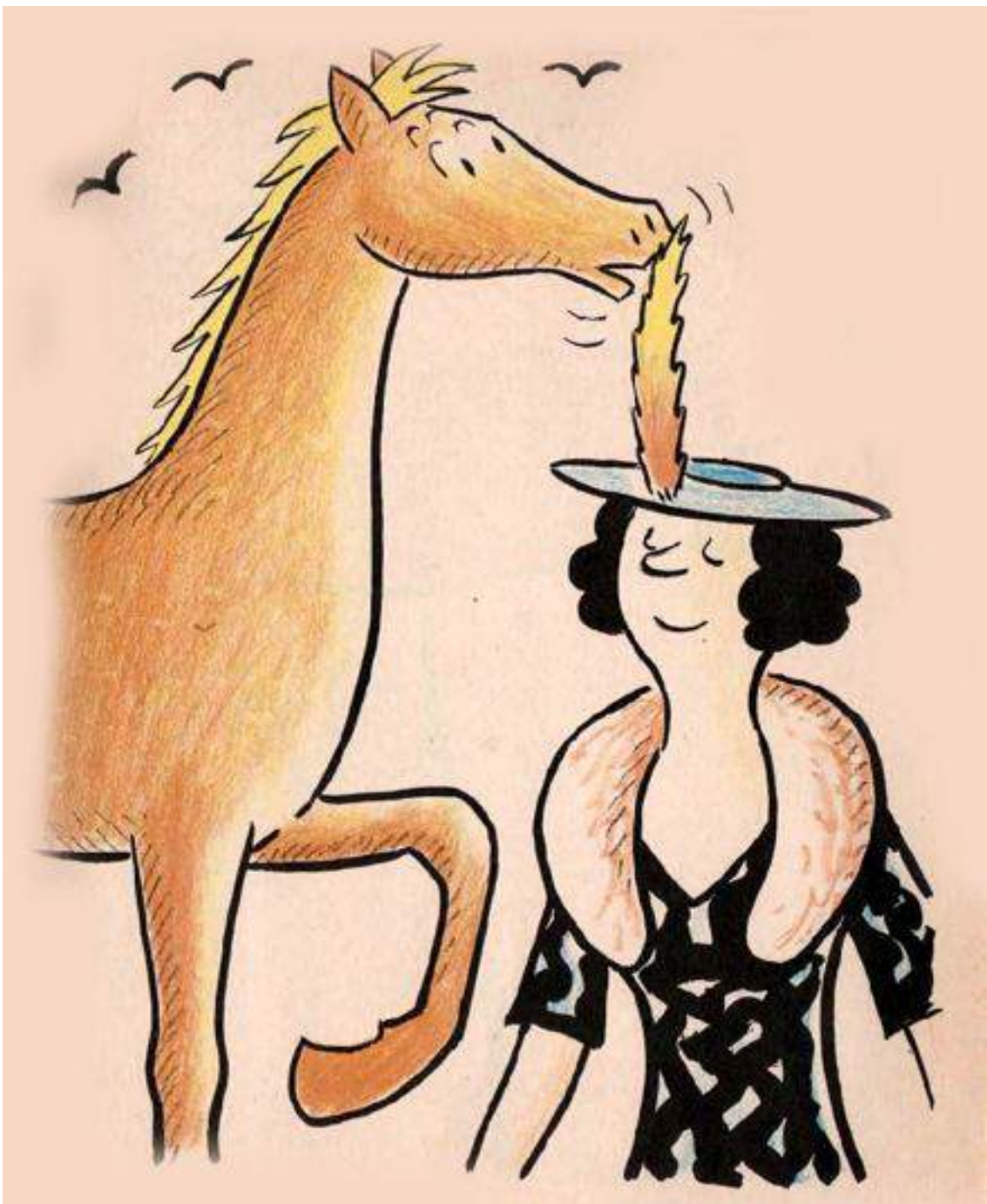

वो पंख दबंग की नाक को छुआ.

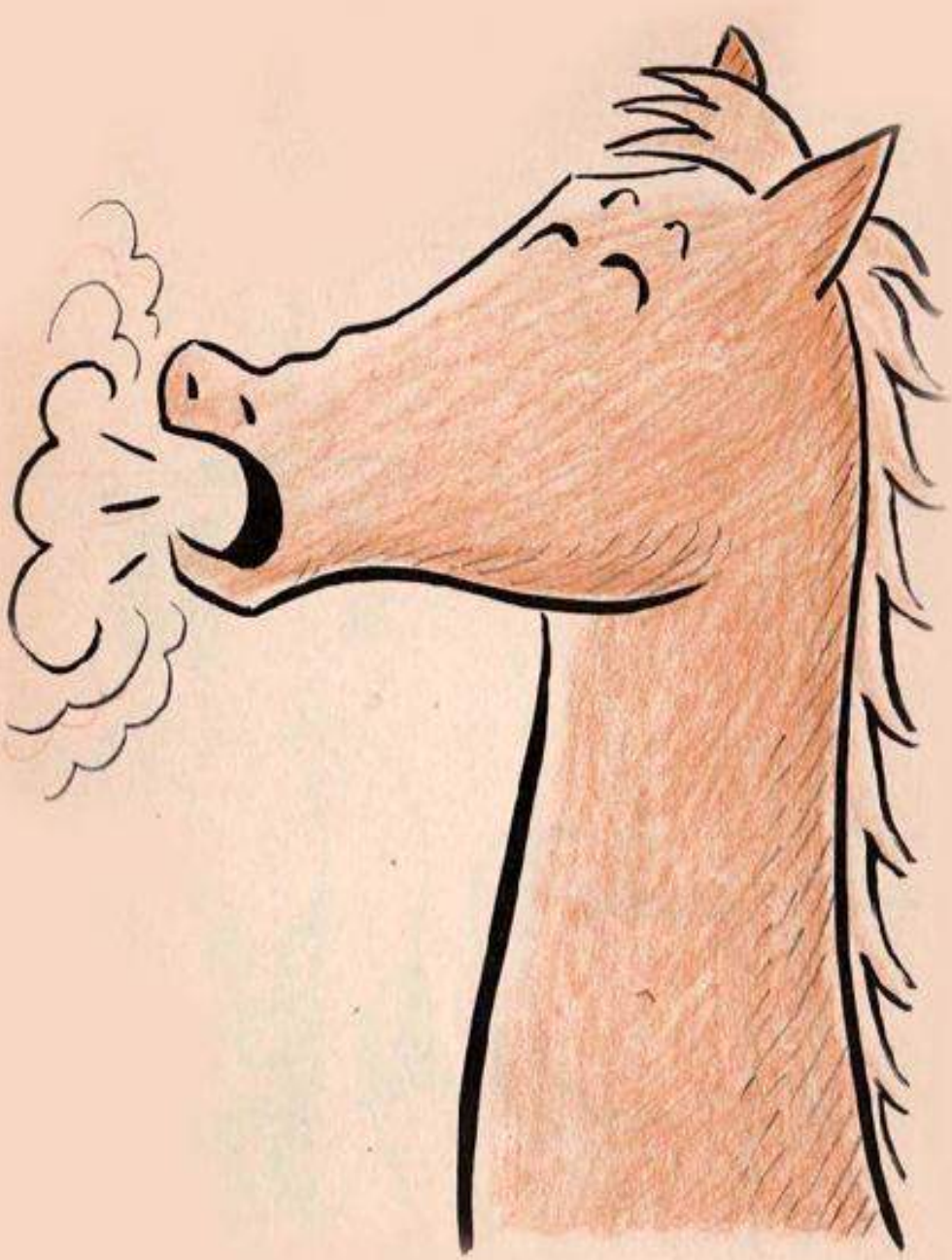

“आ..छी..!”

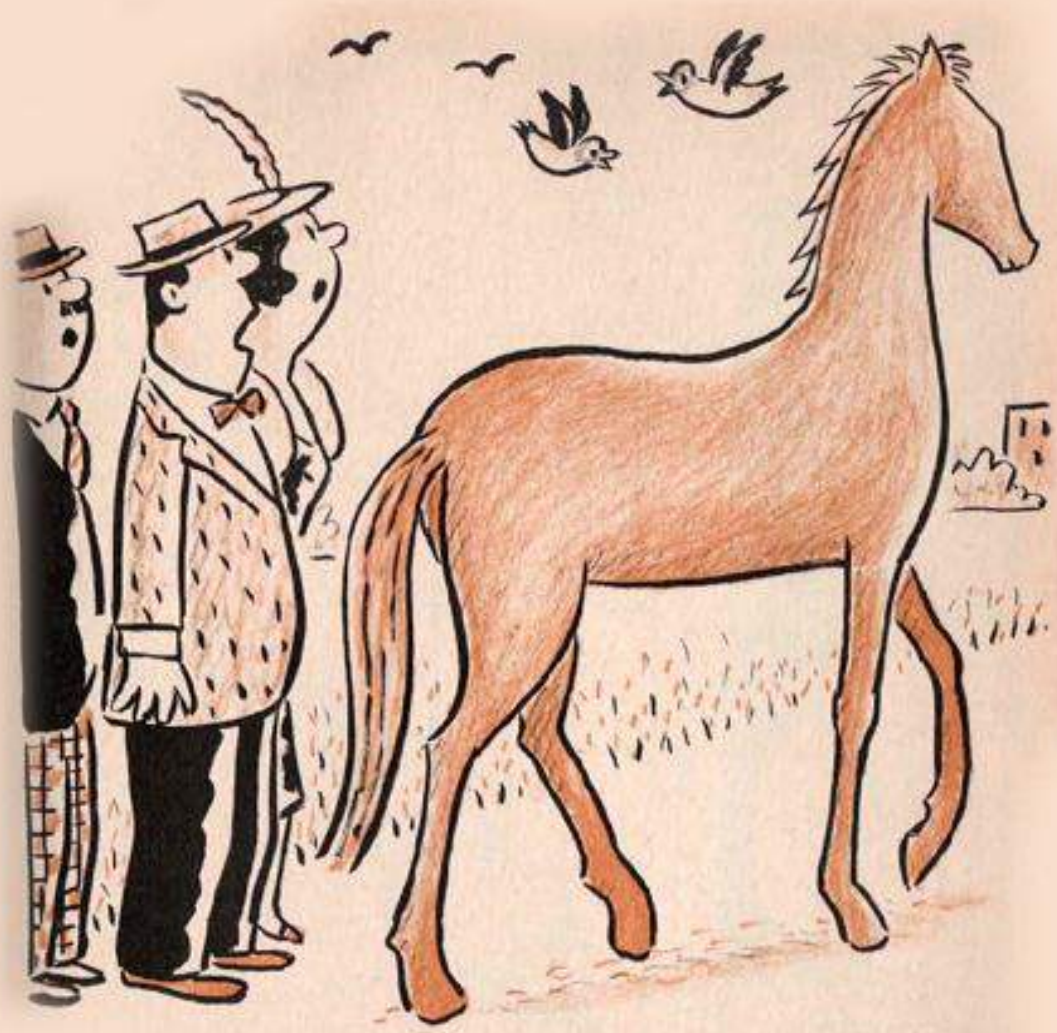

मूर्तियाँ छींकती नहीं हैं,”
चिड़ियों और लोगों ने कहा.
“पर घोड़े छींकते हैं,” दबंग ने कहा.
फिर दबंग वहां से आगे बढ़ा.

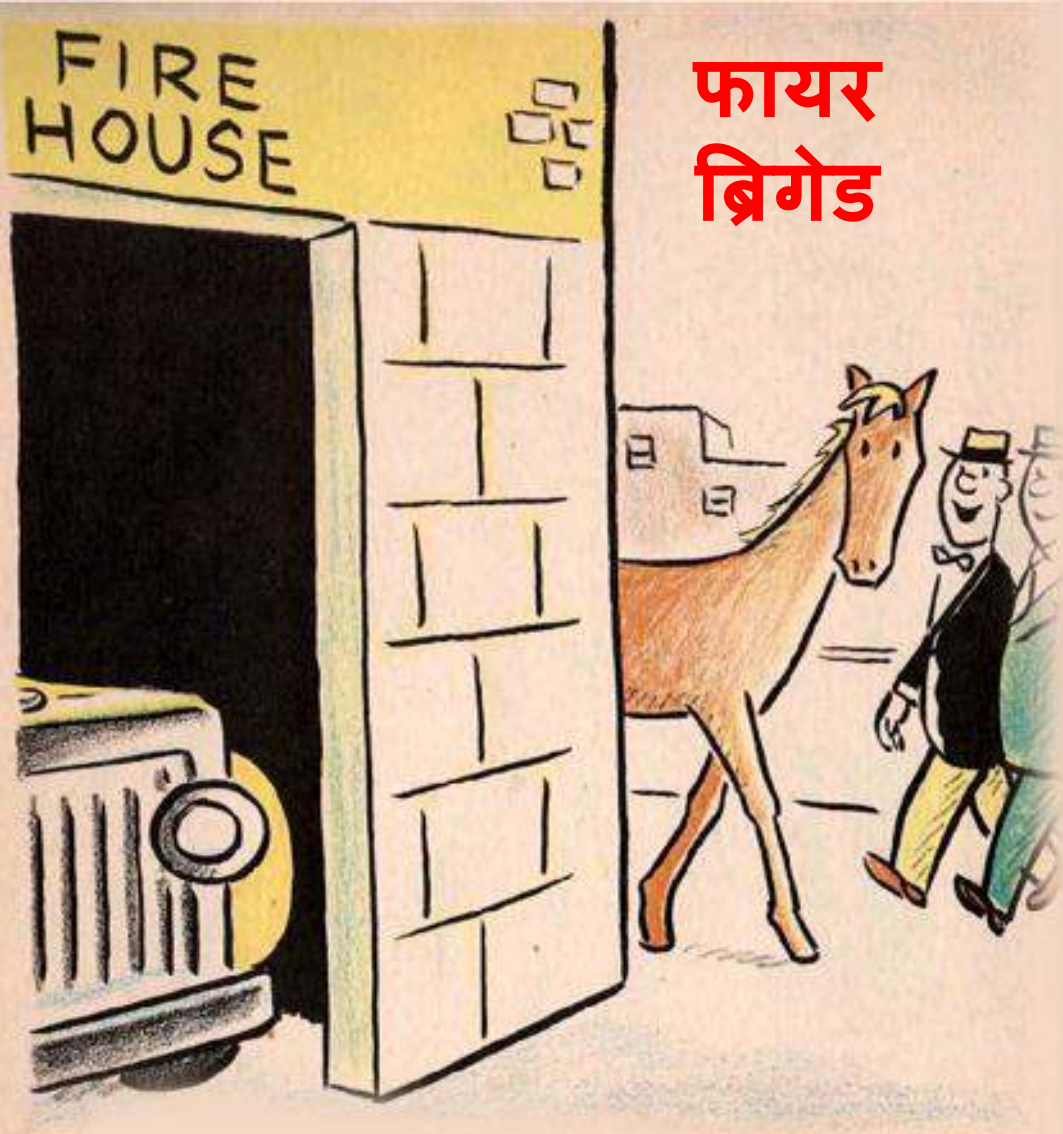

फायर ब्रिगेड

कुछ देर में दबंग फायर-ब्रिगेड के सामने से गुज़रा. “पुराने ज़माने में घोड़े ही फायर-ब्रिगेड की गाड़ी खींचते थे,” एक आदमी ने कहा

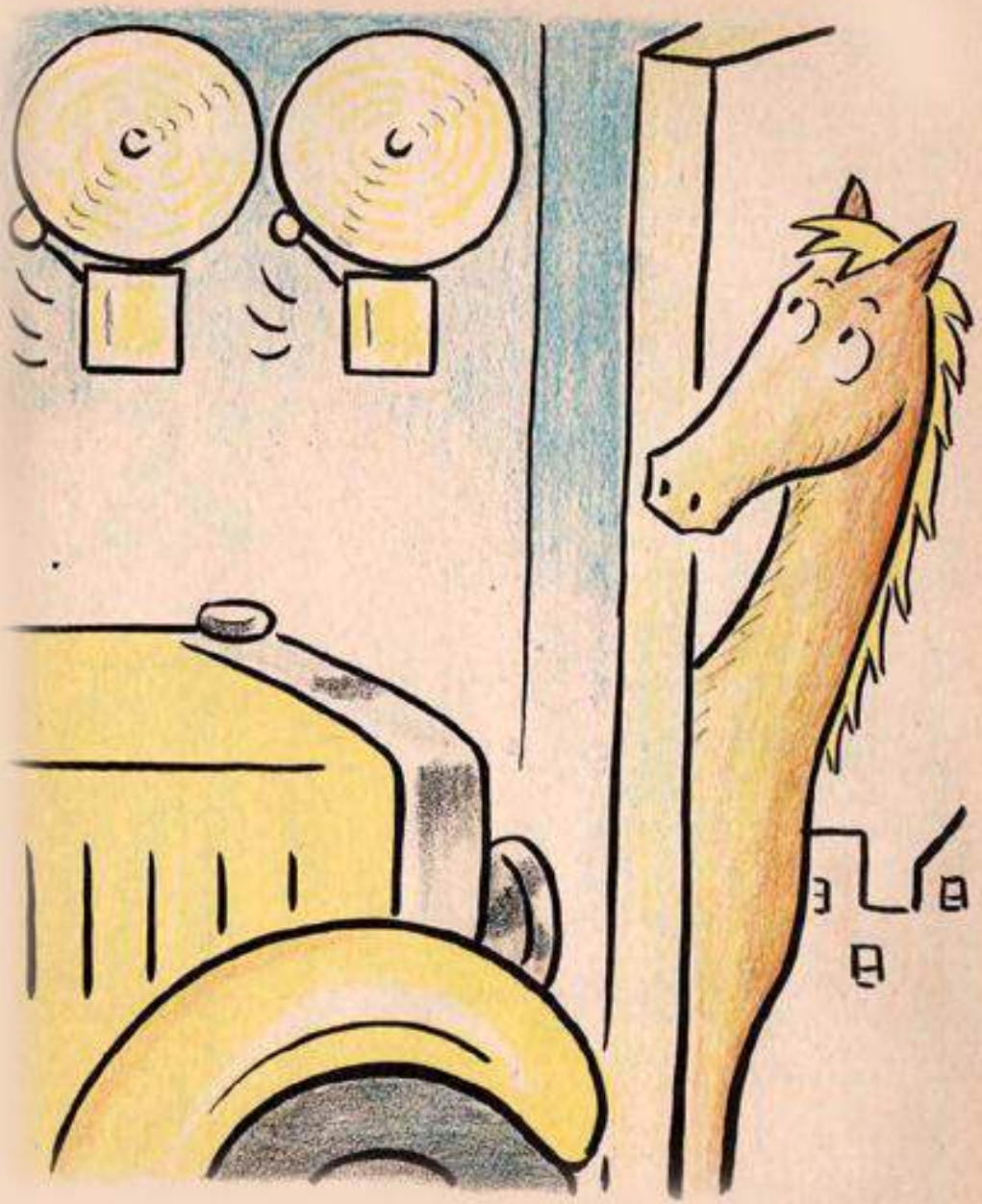

फायर-ब्रिगेड की घंटी टनाटन बजने लगी!

कहीं आग लगी थी!

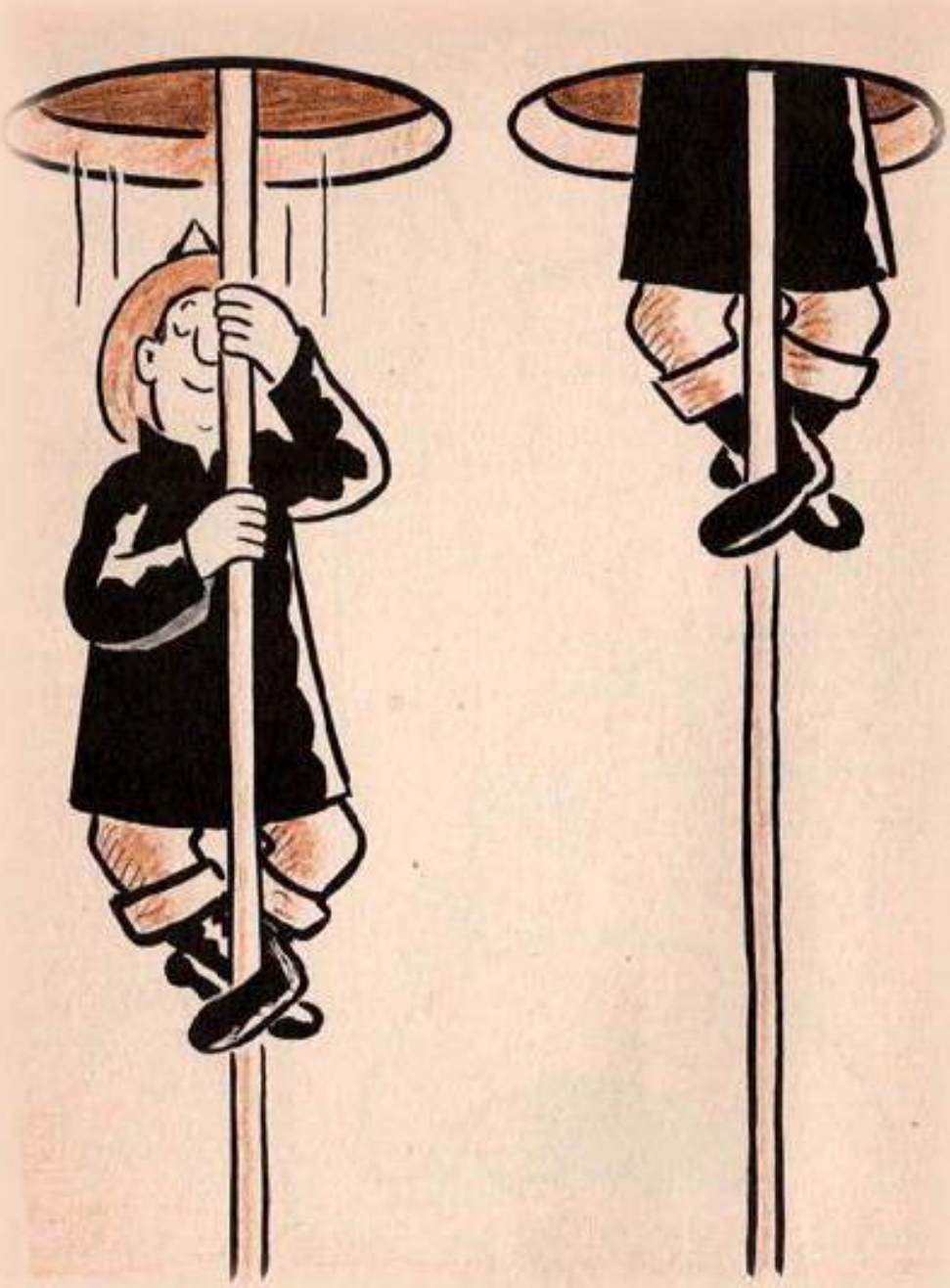

खम्बों से फायरमैन नीचे उतरकर आए.

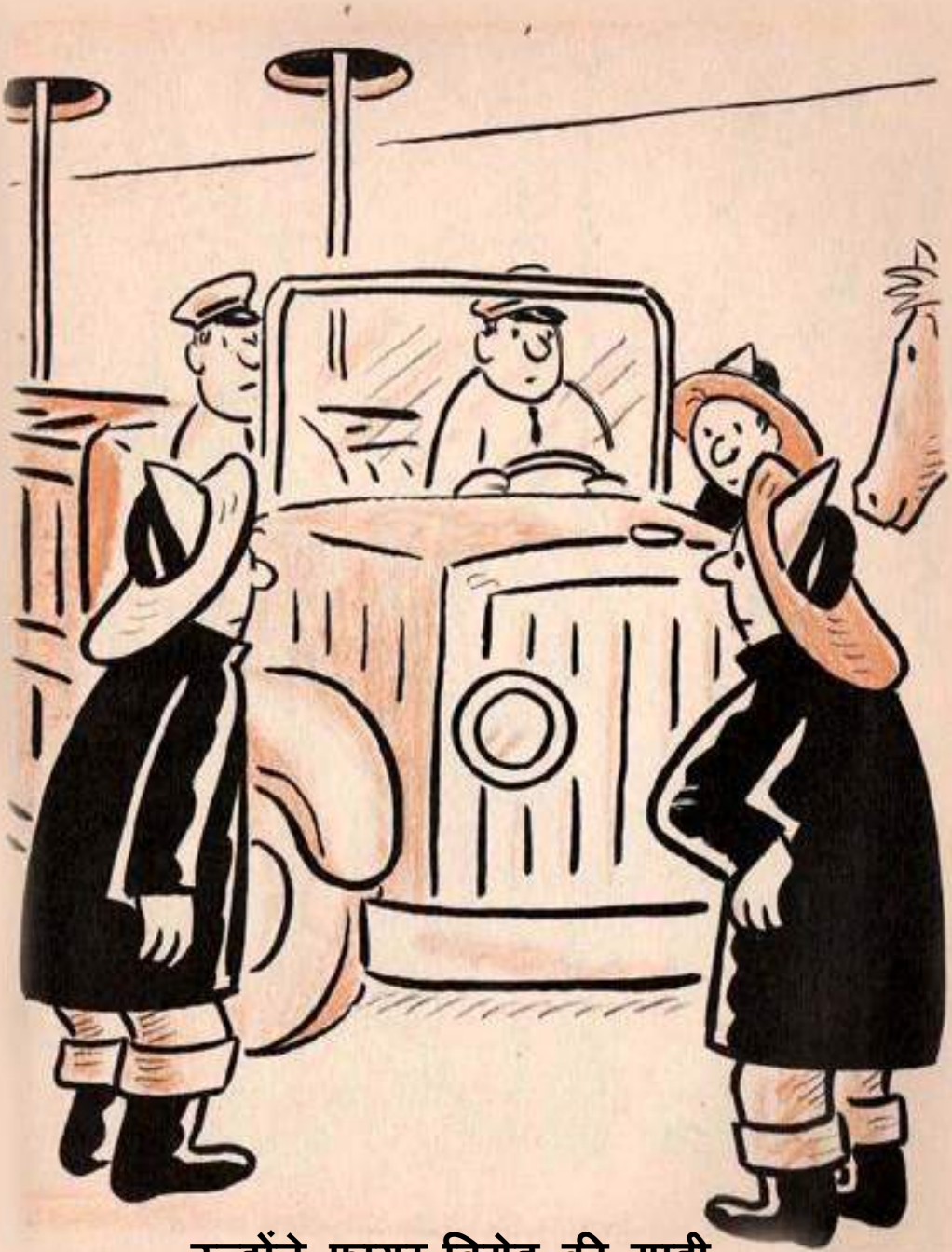

उन्होंने फायर-ब्रिगेड की गाड़ी
को स्टार्ट करने की कोशिश की.
पर गाड़ी स्टार्ट नहीं हुई.

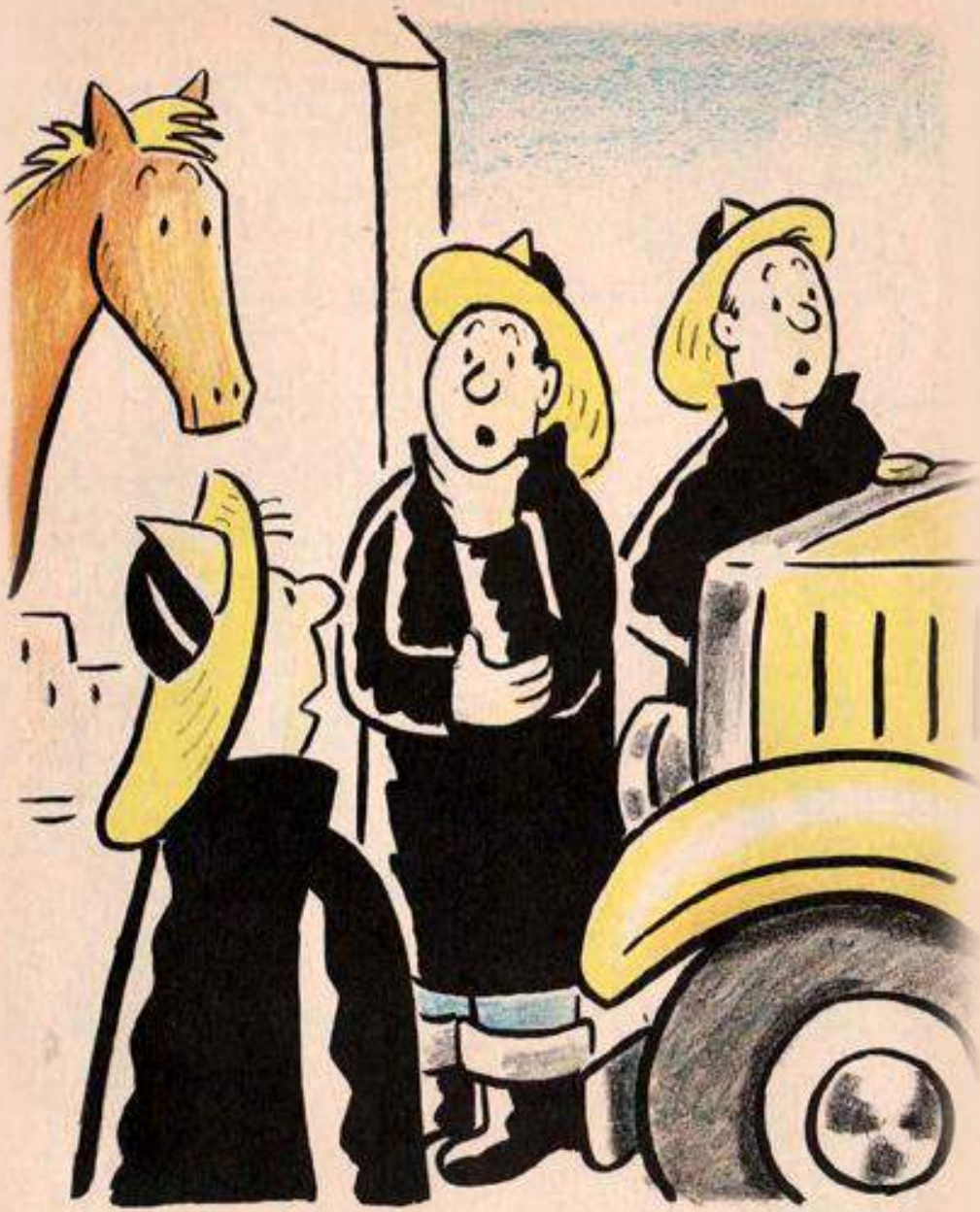

“अब हम क्या करें?”

फायर-मैन ने सोचा.

फायर ब्रिगेड

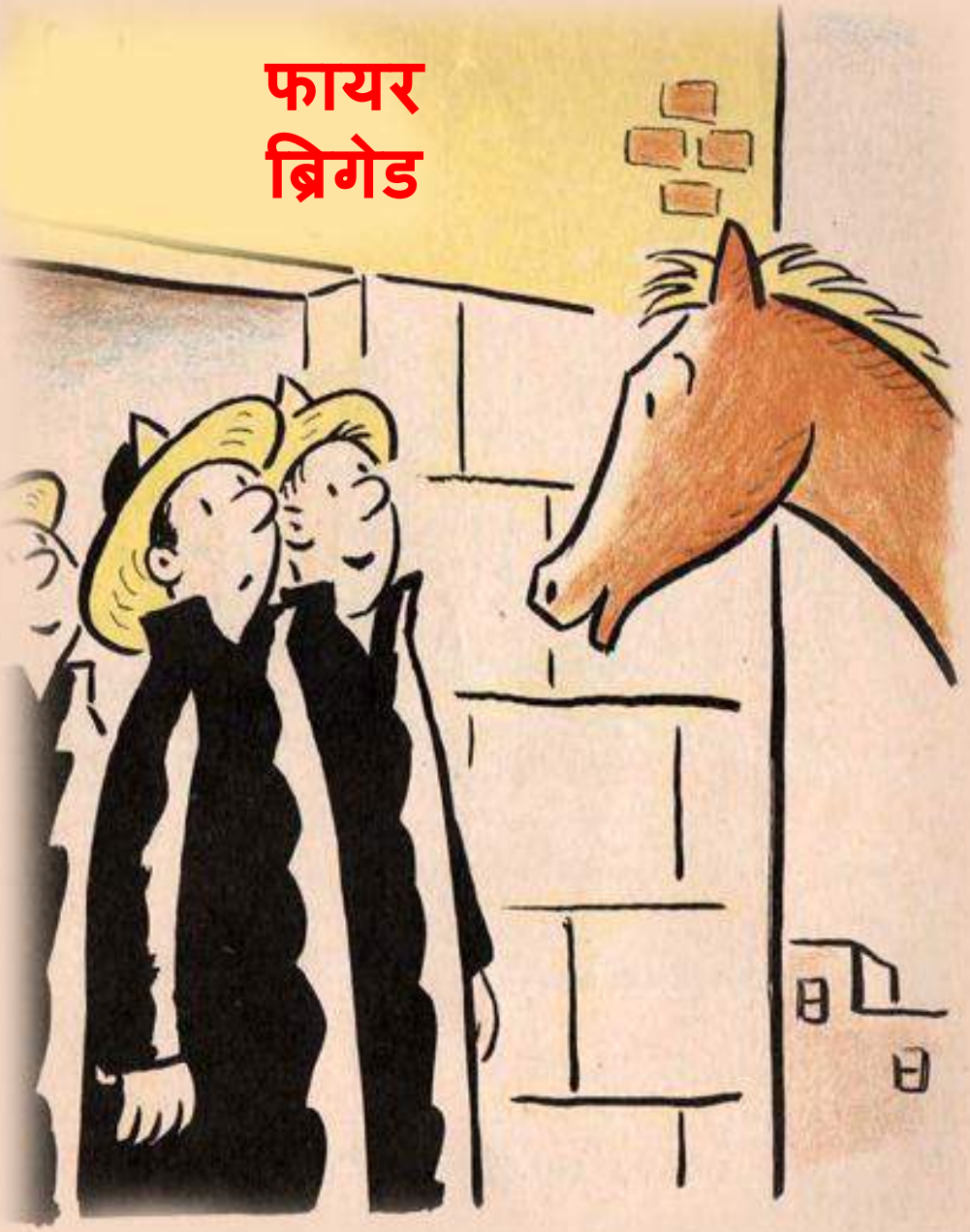

“मैं आपको वहां पर जल्दी पहुंचा दूंगा,” दबंग ने उनसे कहा.

फिर दबंग पानी की गाड़ी को खींचता हुआ,
सड़कों से गुज़रा.
“टन! टन! टन!” की घंटी बजी.

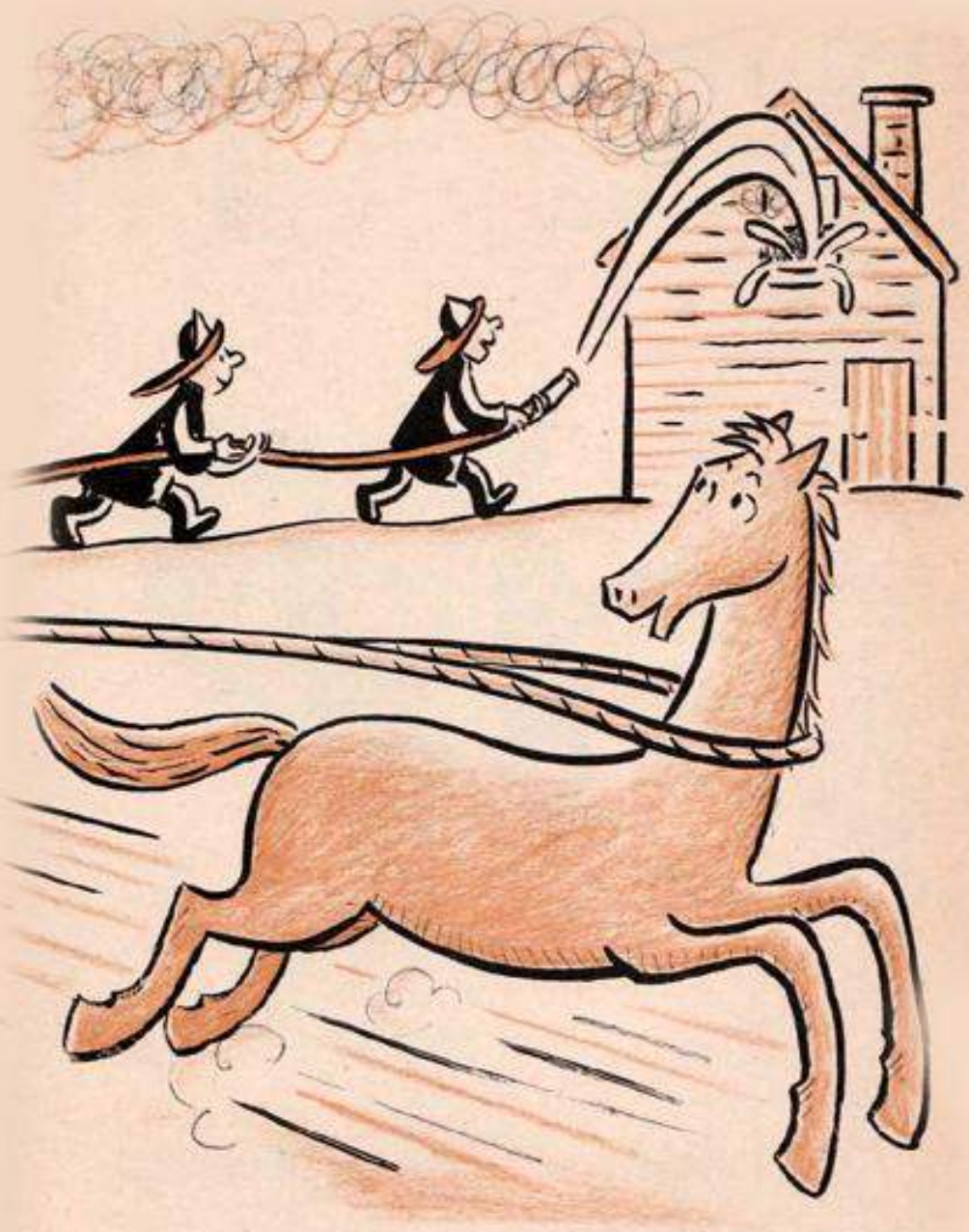

दबंग ने फायर-ब्रिगेड की गाड़ी को
बिल्कुल समय पर पहुँचाया.

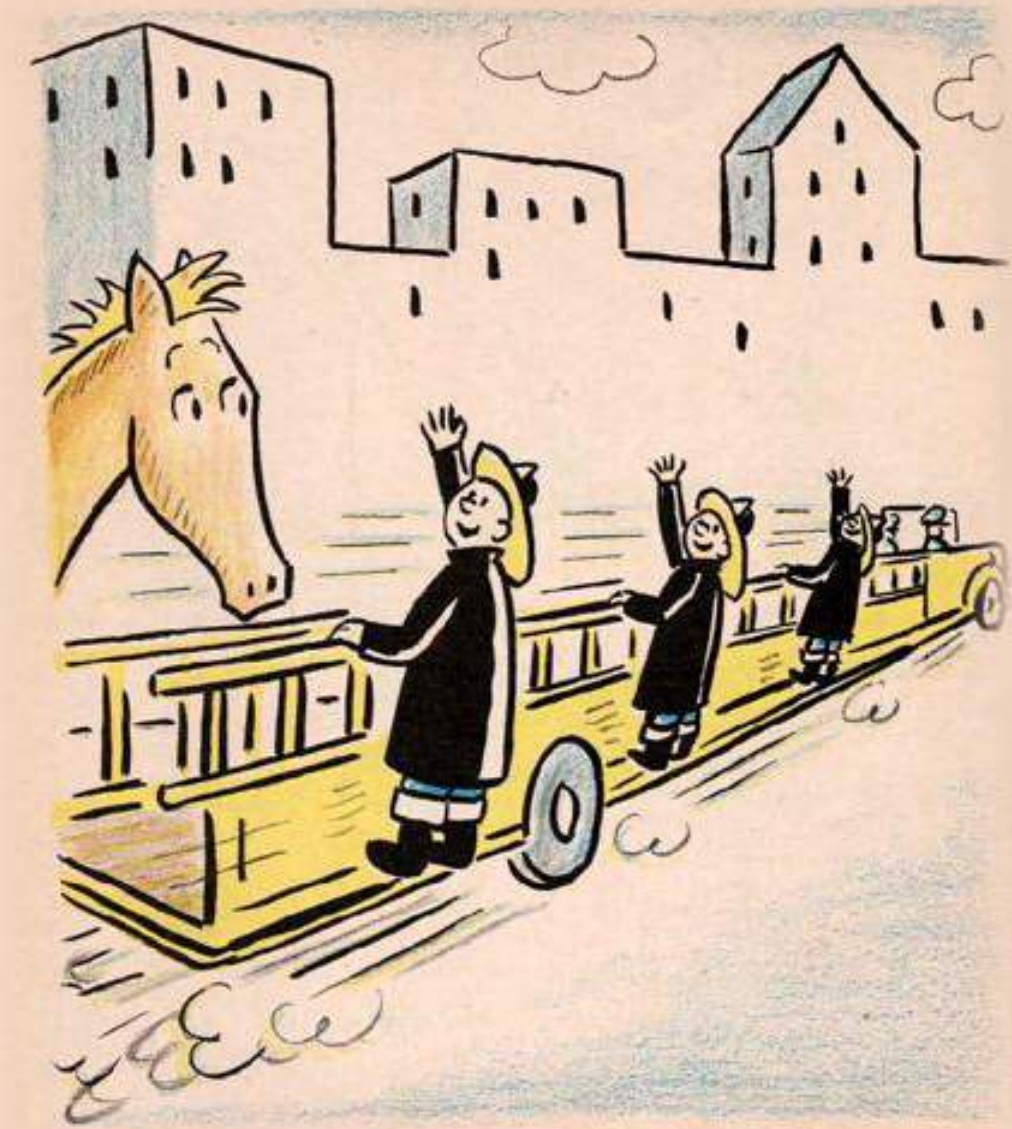

“अब फायर-ब्रिगेड की गाड़ी का
इंजन दुबारा स्टार्ट हो गया है.
अब हमें तुम्हारी ज़रुरत नहीं है.”

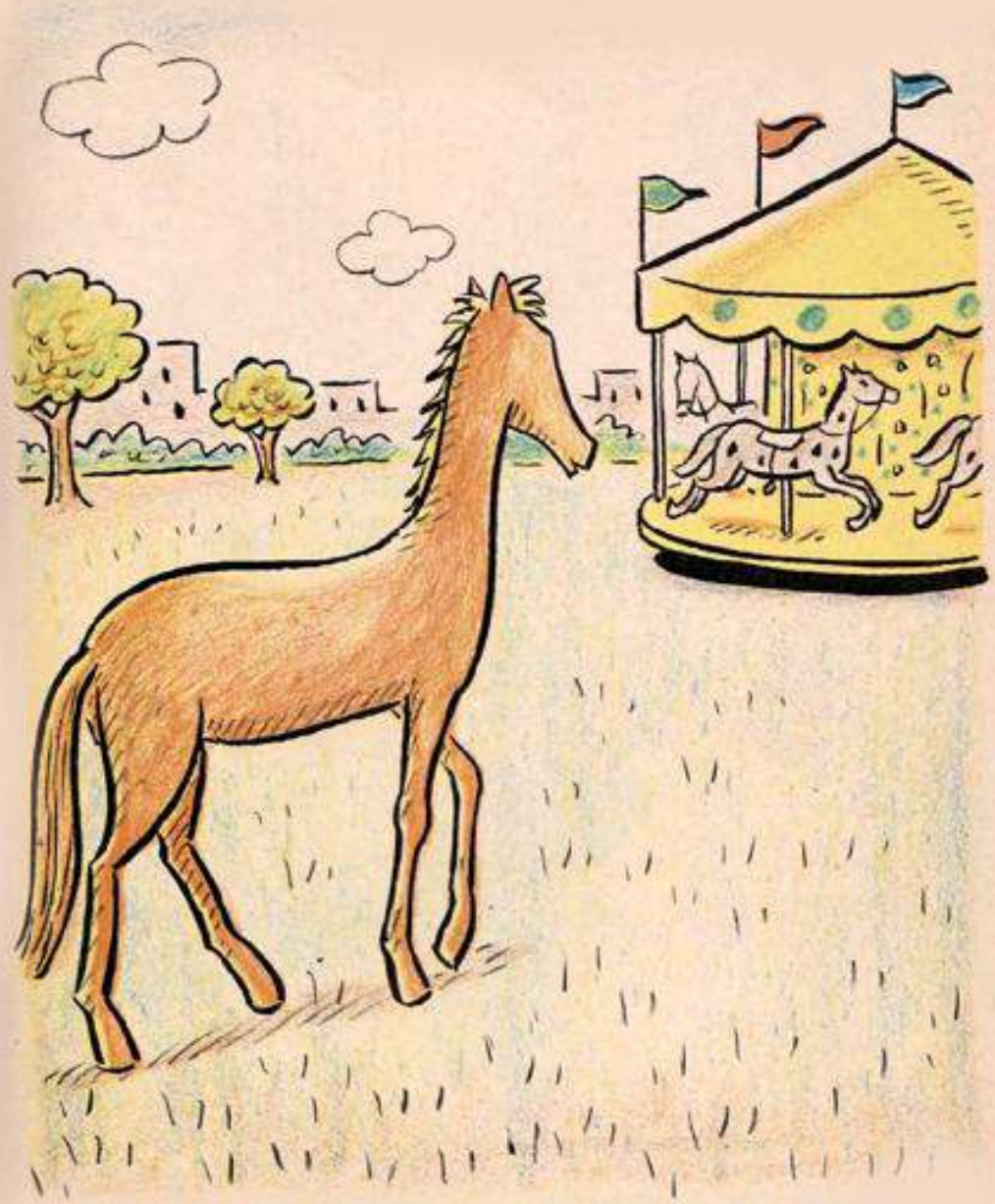

फिर दबंग चलता गया, चलता गया.

अंत में उसे एक मेरी-गो-राउंड झूला दिखा.

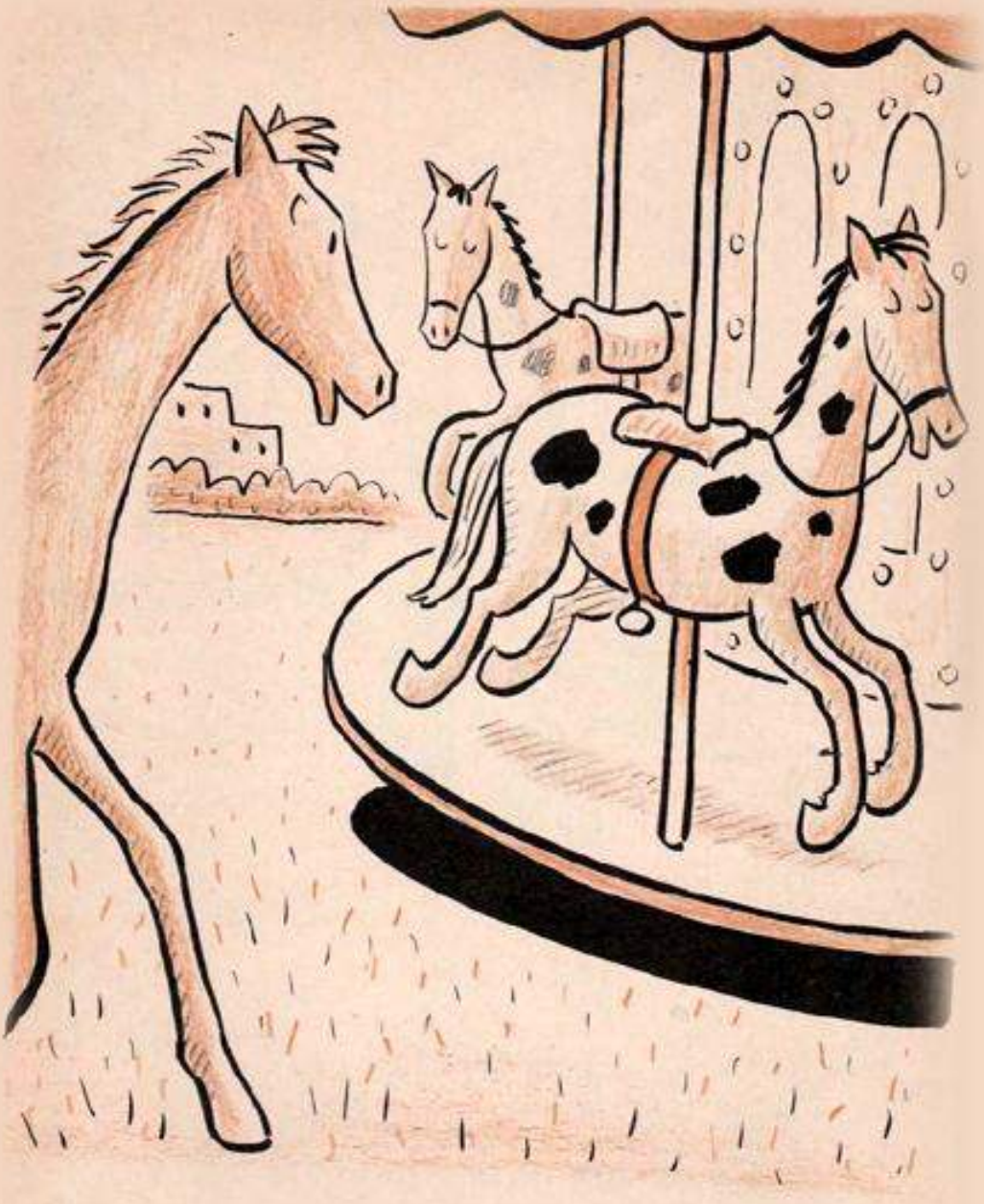

“शायद उन्हें वहां मेरी ज़रुरत हो,”
दबंग ने सोचा.

सारे बच्चे, मेरी-गो-राउंड के झूले की तरफ दौड़े.

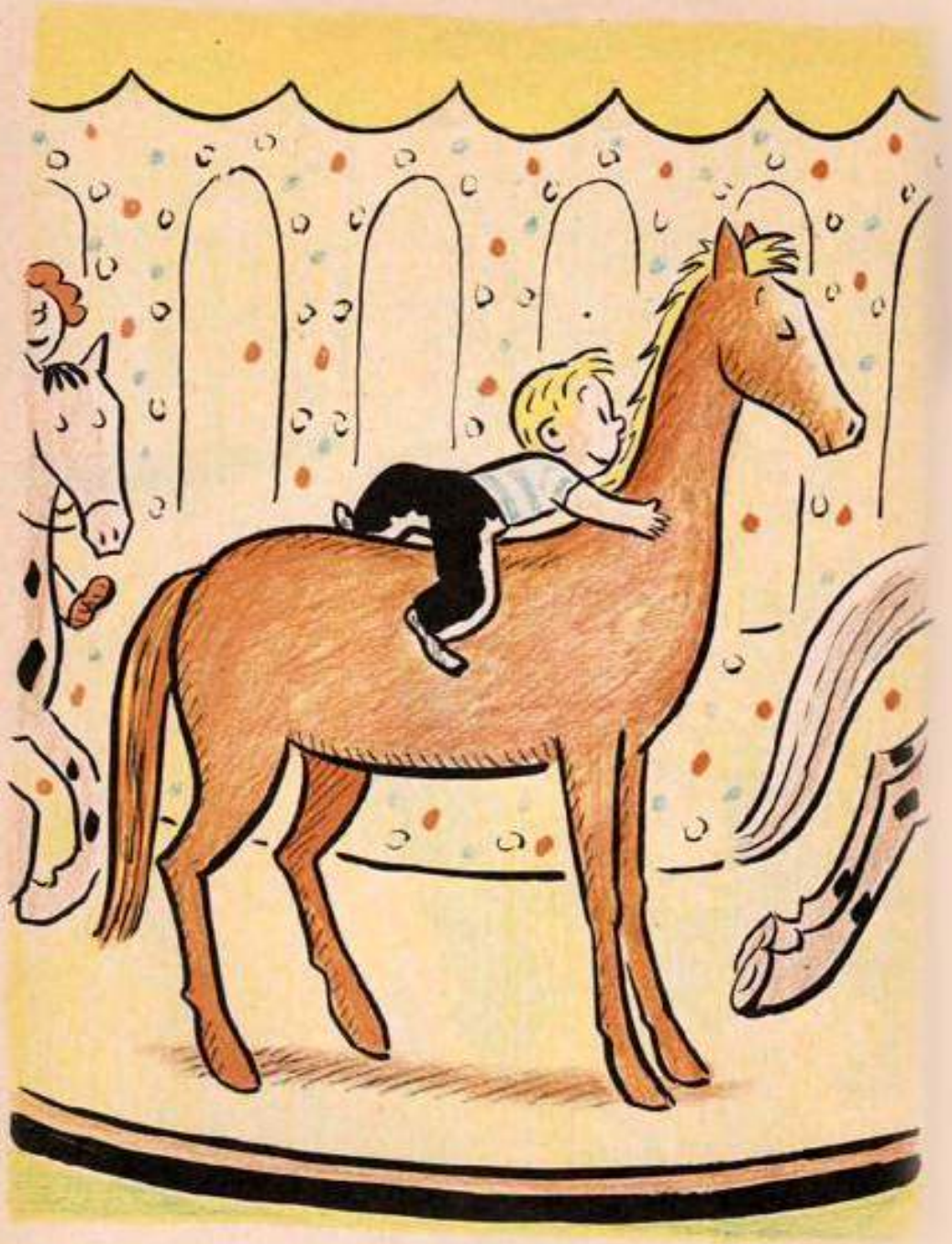

एक छोटा लड़का दबंग के ऊपर बैठ गया.

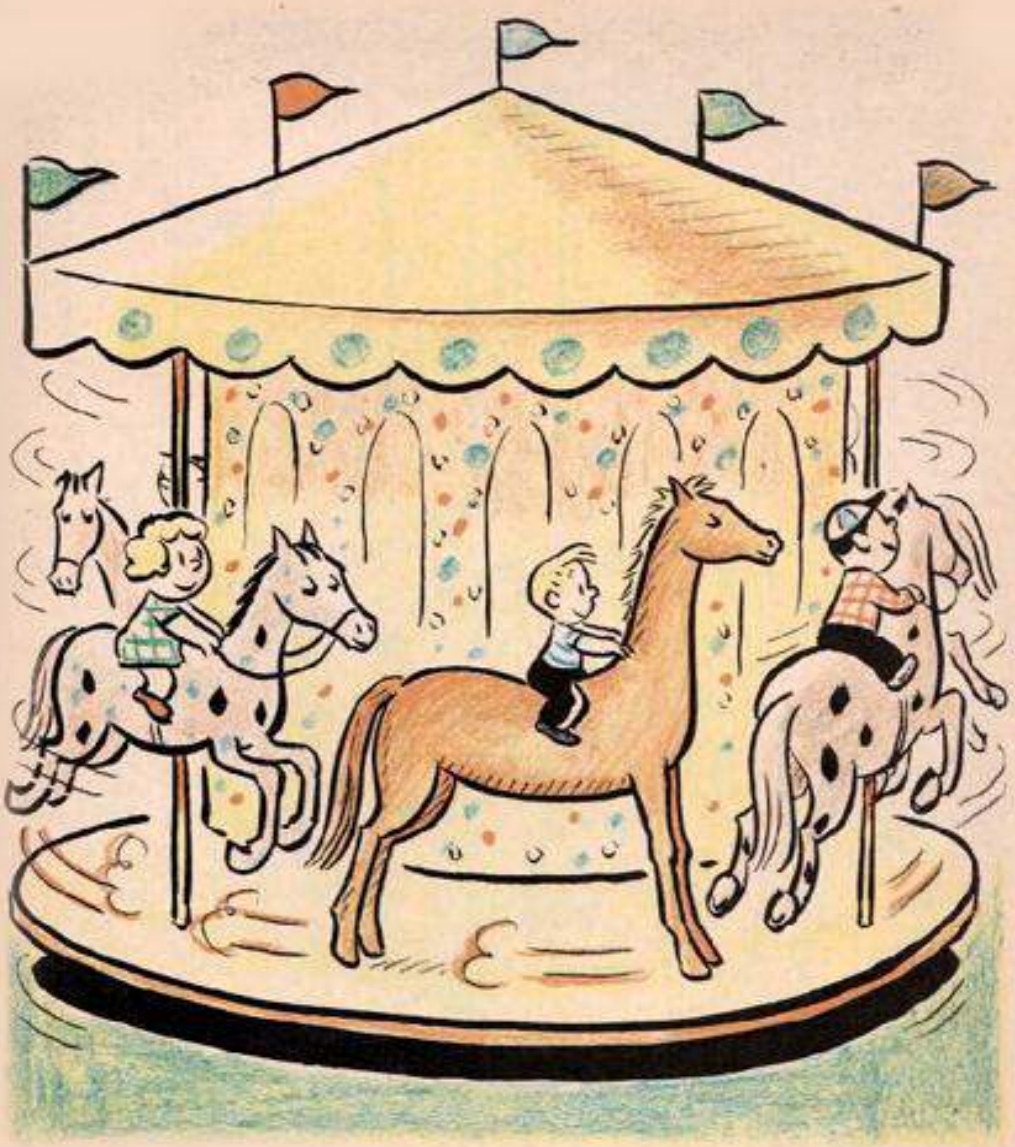

झूला गोल-गोल घूमा!

बच्चों को झूले पर बहुत मज़ा आया.

दबंग को भी.

फिर झूला रुका.

और बच्चे झूले पर से उतरे.

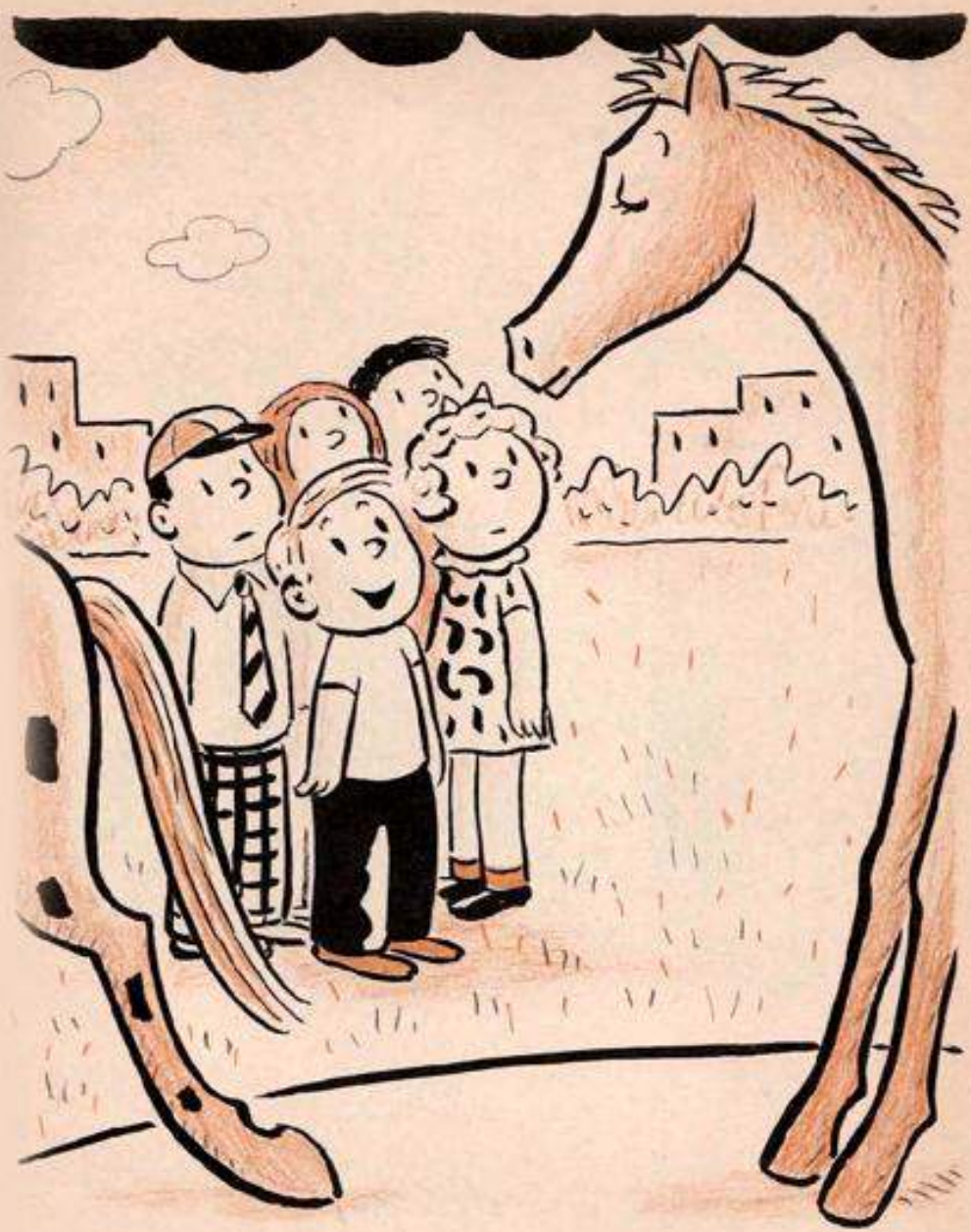

“मेरा घोड़ा असली था,”

एक छोटे लड़के ने कहा.

“नहीं वो असली नहीं हो सकता,”
बाकी बच्चों ने कहा.
“मेरी-गो-राउंड के घोड़े कभी भी
असली नहीं होते हैं.”

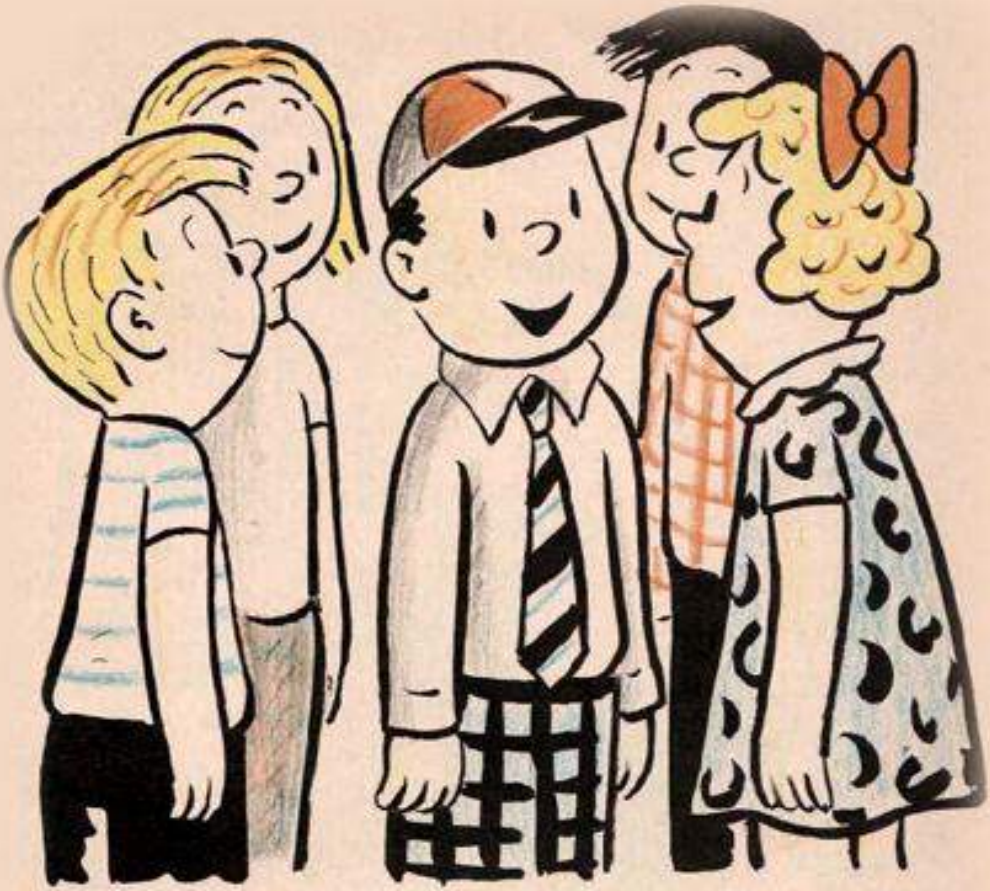

“असली घोड़ा तब दौड़ लगाता है
जब तुम उससे “दौड़ो” कहो!”
एक बच्चे ने कहा.

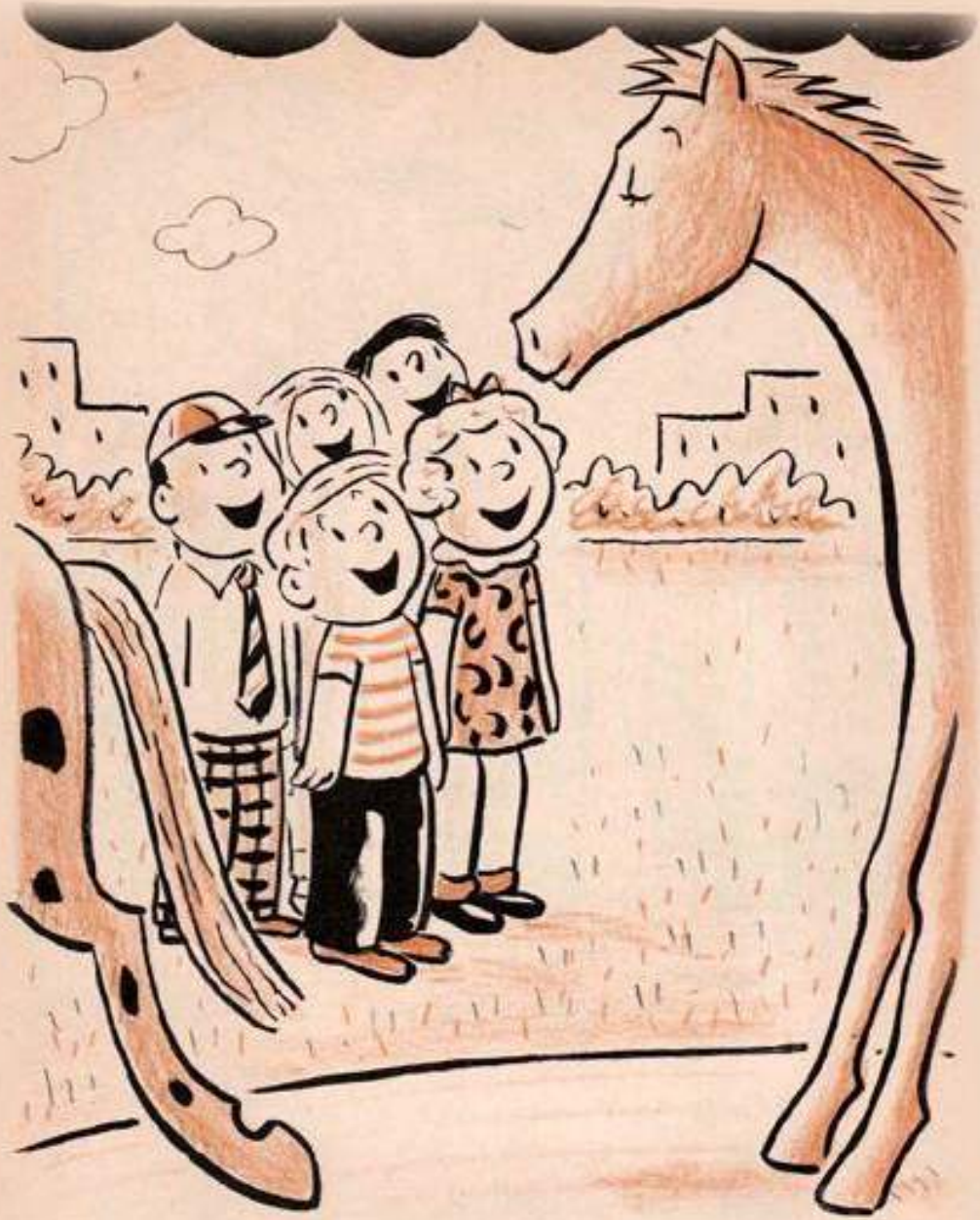

फिर सब बच्चे मिलकर चिल्लाये.

“दौड़ो!”

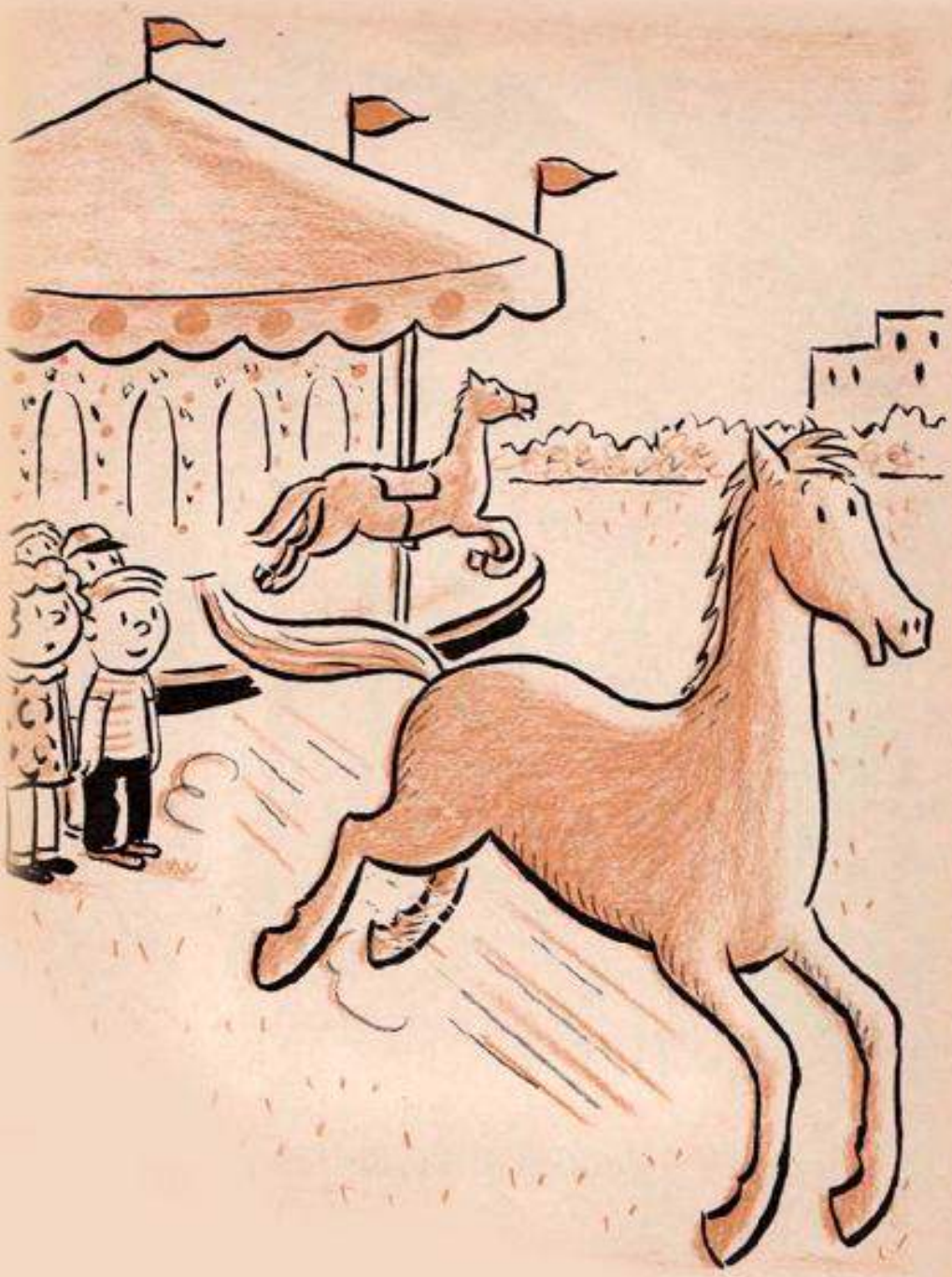

दबंग सरपट दौड़ने लगा.

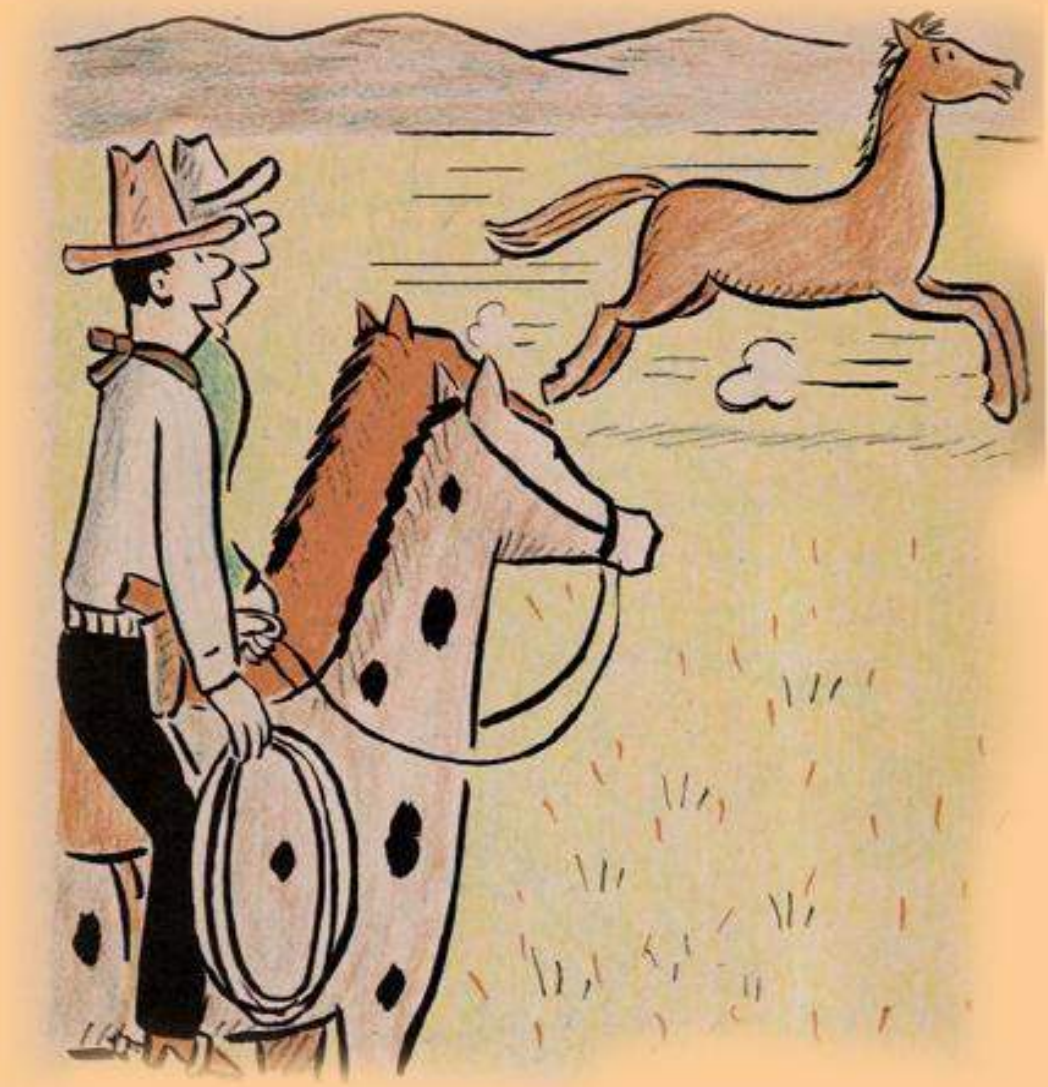

वो बहुत तेज़ दौड़ा, वो दौड़ता ही रहा.
रस्सी लिए आदमियों ने दबंग को देखा.
“वाह!” उन्होंने कहा.

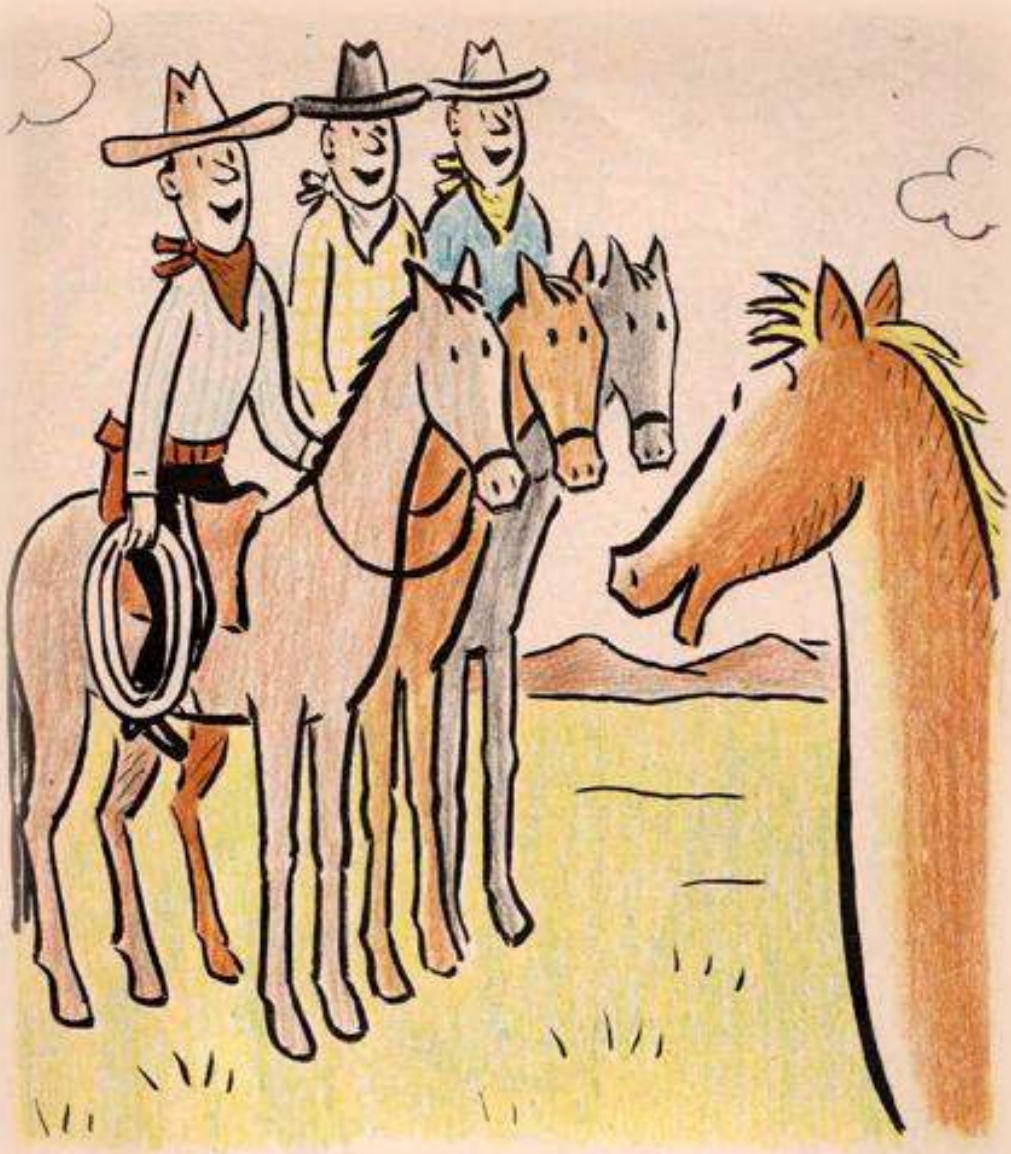

“क्या तुम अब भी हमारे साथ आना चाहोगे?”
उन लोगों ने दबंग से पूछा.
“हाँ,” दबंग ने उनसे कहा.

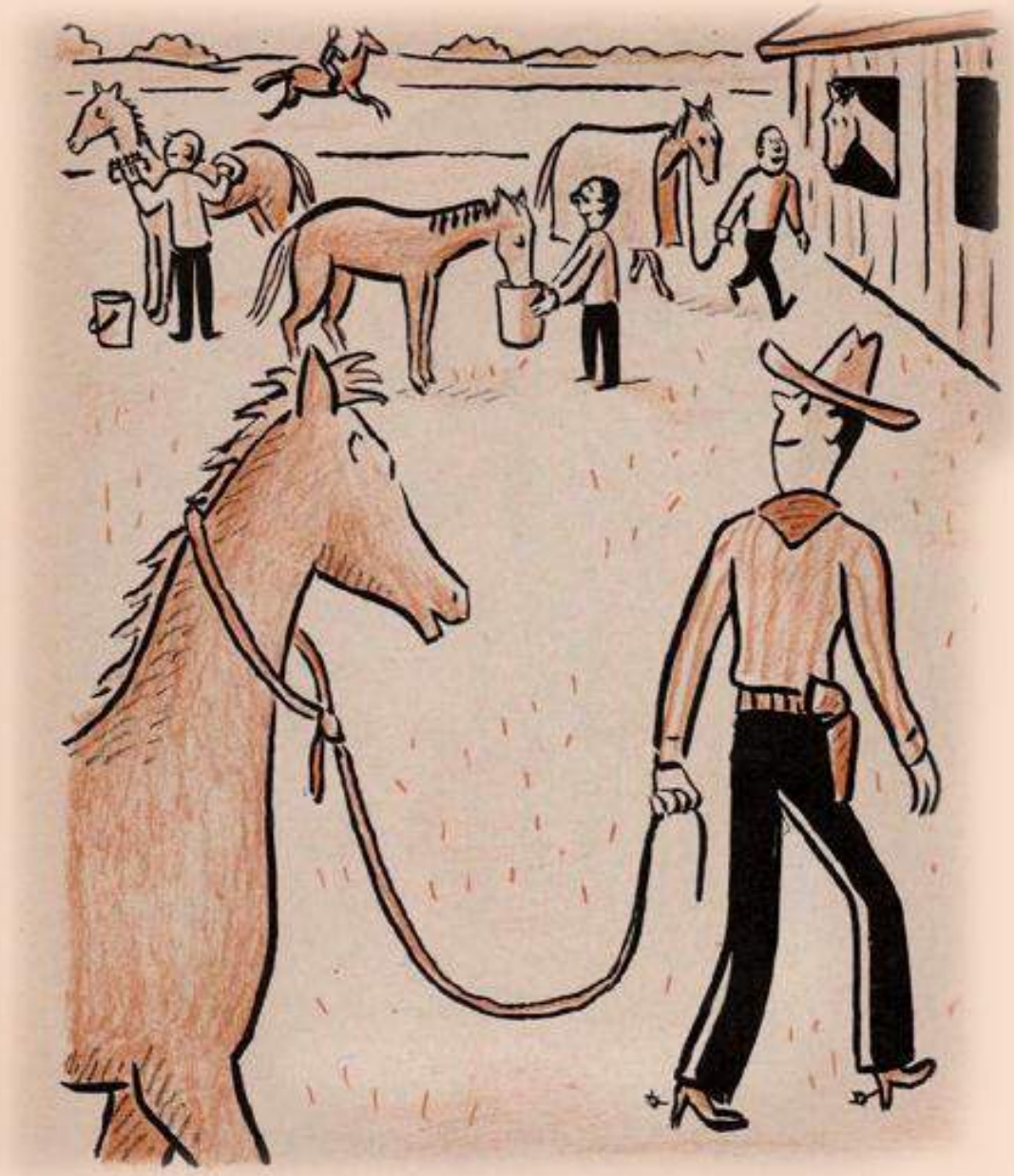

फिर वे लोग दबंग को एक साफ़-सुथरे अस्तबल में ले गए.

दबंग के बाकी दोस्त भी वहां पर थे.

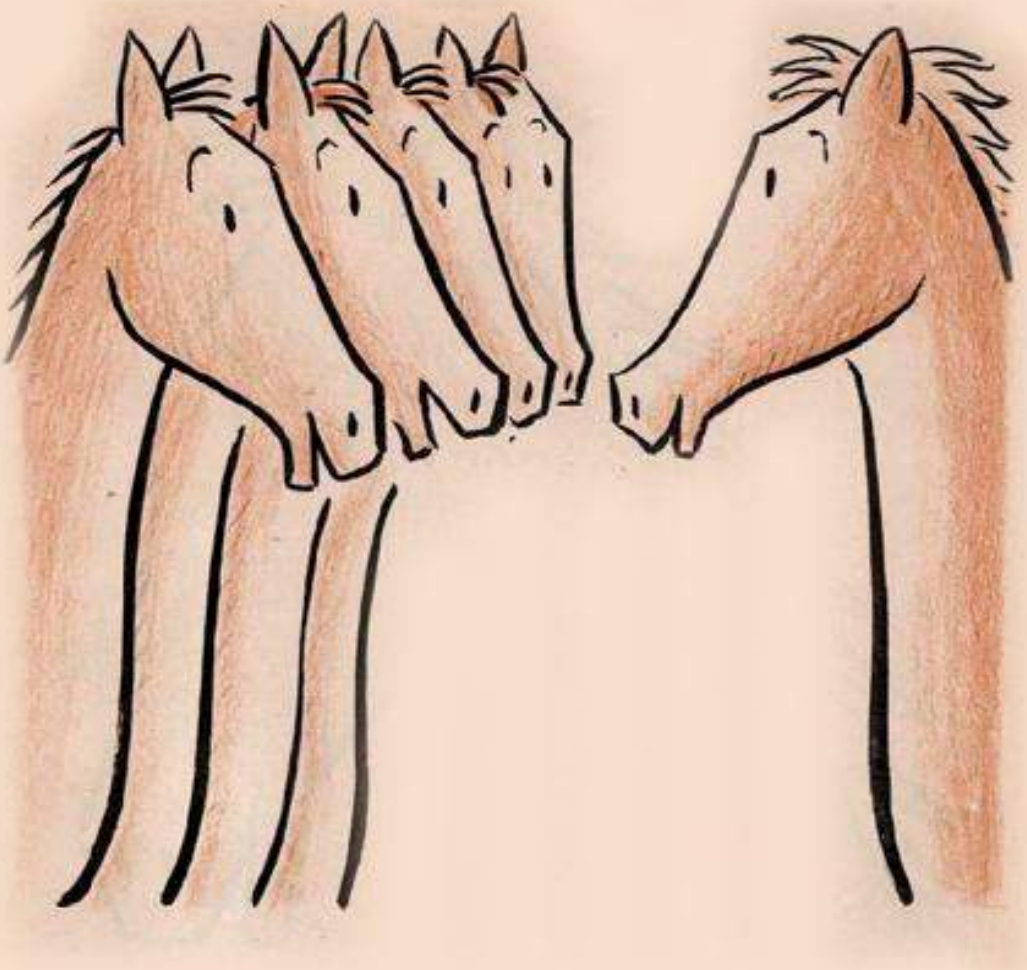

“तुमने ठीक कहा था, दबंग,”
बाकी घोड़ों ने उससे कहा.
“हमें यहाँ पर बहुत मज़ा आ रहा है.
बहुत अच्छा लगता है अगर कोई
तुम्हें प्यार करे और तुम्हारी देखभाल करे.”

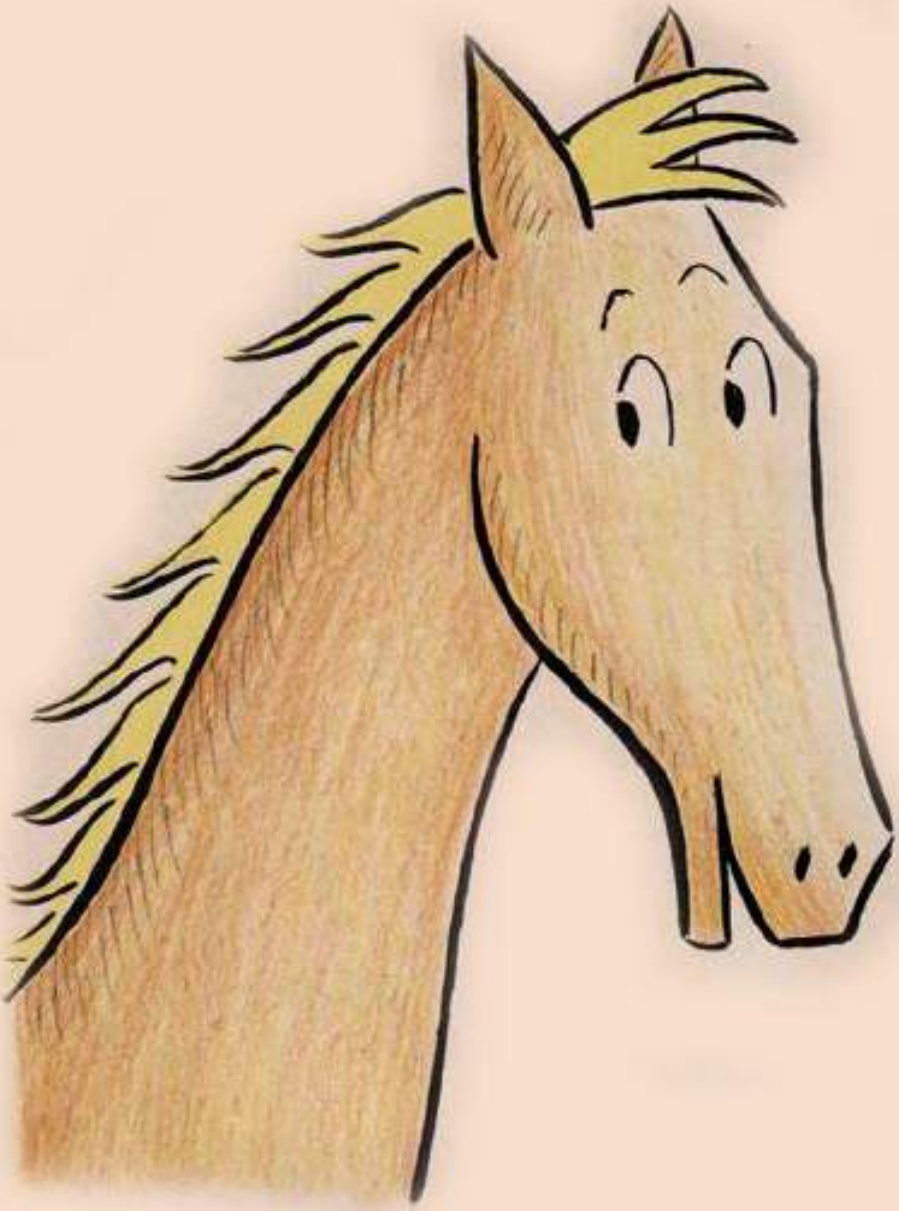

“आपने बिल्कुल सच कहा,”

दबंग ने उनकी बात से सहमति जताई.